मानव मन्दिर

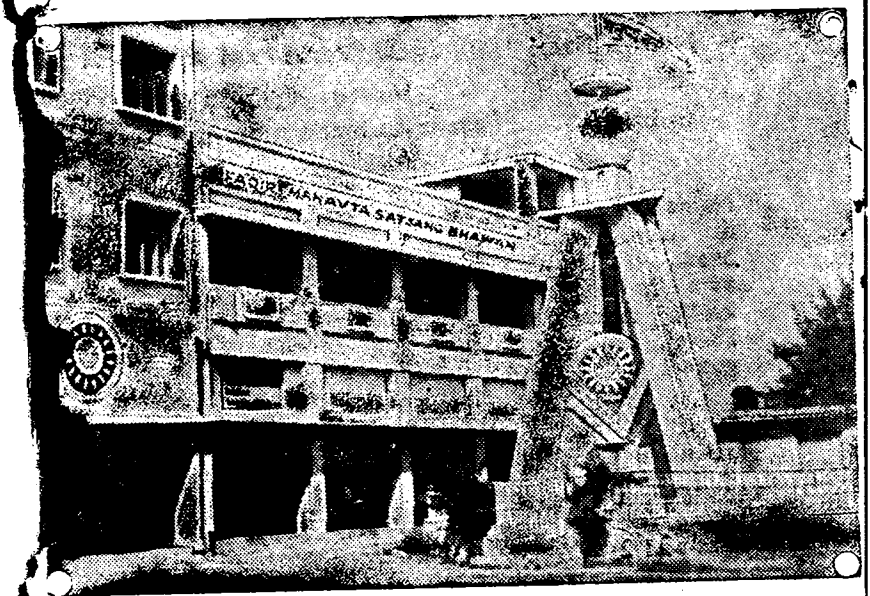

फकीर लायब्रेरी चैरीटेबल ट्रस्ट
सुतेहरी रोड, होशियारपुर
द्वारा अमूल्य भेंट

FORM

(See Rule 8)

Place of Publication	Hoshiarpur
Date of Publication	10th of every month
Periodicity of Publication	Monthly
Printer's Name	Dr. Paras Ram Aggarwal
Nationality	Indian
Address	Manavta Mandir, Hoshiarpur
Editor's Name	Dr. Paras Ram Aggarwal
Nationality	Indian
Address	Manavta Mandir, Sutehri Road, Hoshiarpur
Name and address of individuals, who own the Manav Mandir or partners or shareholders, holding more than one Percent of the total capital.	Faqir Library Charitable Trust, Hoshiarpur

I, Dr. Paras Ram Aggarwal hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Dated : 11-2-85

Signature of ...

Printed and Published by : Dr. Paras Ram a... Shiv Dev Rao Press, Manavta Mandir Hoshiarpu... for the Faqir Library Charitable Tr...

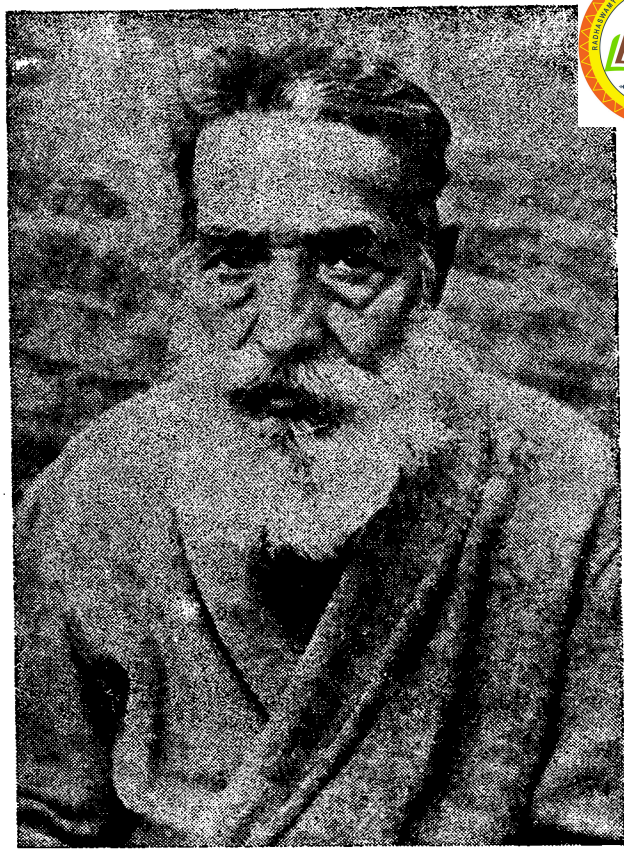

Param Sant Param Dayal Faqir Chand Ji Maharaj

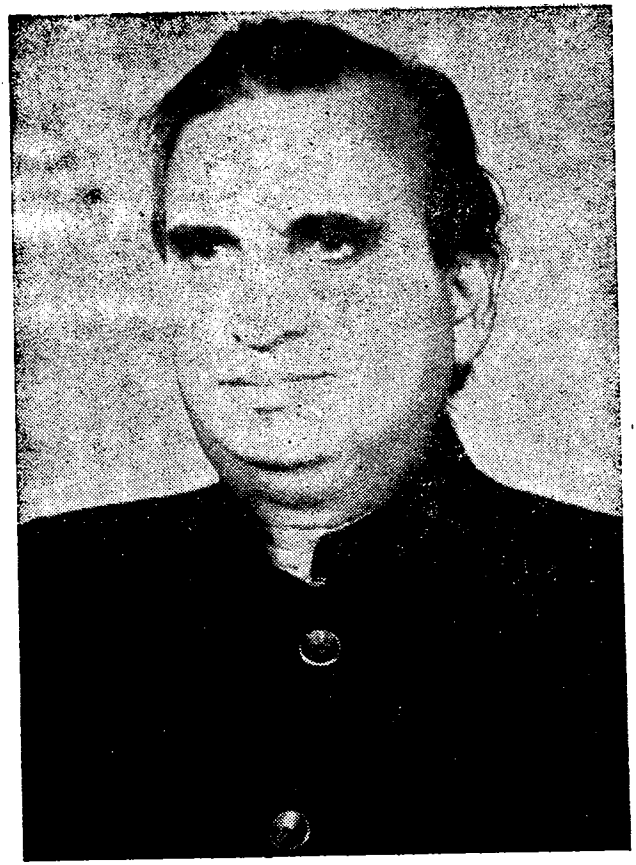

Param Sant Manav Dayal Dr. I.C. Sharma Ji Maharaj

मासिक—

मानव मन्दिर

सम्पादक :

डा० परस राम अग्रवाल

वर्ष 11	सोमवार 11 फरवरी 1985	संख्या 10

यह बताई गई है कि जिसने शब्द को पा लिया है और जिस के जीवन का आदर्श शब्द है उसी की संगत और सेवा करने का आज्ञा है। जो मनुष्य इस विशेषता से खाली है उसकी सेवा और संगत से परमार्थ का सच्चा लाभ प्राप्त नहीं किया जा सकता।

नदी में पानी है, नदी स्वयं पानी है, नदी पानी से भरी हुई है जिसको जीवन के ताजापन, जीवन की उन्नति की आवश्यकता हो और प्यास बुझाने की इच्छा हो वह नदी के पास रहे, नदी में नहाये, नदी का पानी पिये तब उसकी इच्छा पूरी होगी। जिस जीव को गर्मी की इच्छा है वह अग्नि के पास रहे और अग्नि का बनकर रहे तो उसे गर्मी का फ़ायदा हो जायेगा। बिल्कुल इसी तरह गुरु शब्द स्वरूप है। जिसको गुरु के शब्द से आध्यात्मिक लाभ प्राप्त करने की इच्छा हो वह गुरु की संगत करे, गुरु की सेवा करे तब उस शब्द का लाभ पहुँचेगा।

गुरु शब्द संस्कृत की धातु 'गृ' (गिरा) से निकला। गिरा कहते हैं वाणी या शब्द को। यह सारा संसार शब्द से ही प्रकट हुआ है और शब्द से ही भरा हुआ है। इस संसार में सबसे ज्यादा शब्द स्वरूप और सुन्दर मूर्ति का नाम गुरु है। शब्द ने जिस शरीर में अपनी खूबी का चमत्कार दिखाया है और जिसने सबसे ज्यादा सुन्दरता के साथ जिस प्राणी में अपना प्रकटाव कर रखा है उसी का नाम गुरु है और उसी की संगत और सेवा सबसे ज़रूरी है।

'और पहचान करो मत कोई, लक्ष्य अलक्ष्य न देखो सोई।'

गुरु की और पहचान न करो। वाच और लक्ष्य पर न जाओ क्योंकि प्रकट रूप में यह तुम्हारी समझ से बाहर है।

लक्ष्य कहते हैं आदर्श को, Ideal को। अगर कोई

आदमी इन झगड़ों में पड़े तो पहले तो आदर्श का समझ में आना ही मुश्किल है, दूसरे वह लफ्ज़ी झगड़ों में पड़ कर 'तत् त्वम् असि' की बहस की तरफ चला जायेगा। इसमें 'तत्' लक्ष्य है और 'त्वम्' वाच है और 'असि' दोनों को मिलाने वाली कड़ी है। अब तुम समझो जिस आदमी ने अच्छी तरह चौसाधन नहीं किया वह इस वाच और लक्ष्य को क्या समझेगा और व्यर्थ ही वाद-विवाद में पड़कर अपना समय बरबाद करेगा इसलिए सन्तों ने साधारण तौर पर 'शब्द सनेही' गुरु की निशानियाँ बता दी हैं जिनका असर स्वयं ही सत्संग में सत्संग करने वालों के दिलों पर होता रहेगा। उनमें से शब्द के बारे में ये कुछ निशानियाँ हैं।

'जब वह घट का भेद सुनावें,
नभ की ओर सुरत मन भावें।'

जिस वक्त वह सत्संग के वचन कहेंगे सुनने वाले की आत्मा उनके वचनों से प्रभावित होकर स्वयं ही आकाश की ओर उड़ने लगेगी और उसमें मस्ती आयेगी। दूसरी पहचान शब्द सनेही गुरु की यह होगी कि उनके वचनों से सत्संगियों में एकता और प्रेम का उदय होगा और मेरे-तेरेपने की बुरी आदत सदा के लिए चली जायेगी।

'हम तो आये हंस चेतावन, धारा शब्द रूप मन भावन।
सत्तलोक हंसन ले जाऊँ, काल जाल से जीव छुड़ाऊँ।'

यह 'गिरा' यानि गुरु के शब्द का मक़सद है जिसकी समझ खुद-ब-खुद सत्संग में आयेगी और सत्संगी का दिल उनके साथ मोहब्बत और प्रेम करने से परमार्थ की तरफ आयेगा और उसे लक्ष्य और अलक्ष्य के झगड़े में पड़ने की ज़रूरत नहीं रहेगी।

'शब्द भेद लेकर तुम उनसे,
शब्द कमाओ तुम तन मन से।'

ऐसे गुरु से शब्द का भेद लेकर तुम तन-मन से शब्द की कमाई में लग जाओ। नदी पानी से भरी हुई है उसके पास जाओ अपना लोटा पानी से भर लो और खुश होकर पानी को पी लो ताकि तुम्हारे अन्तर और बाहर में ताज़गी आ जाये। इसी प्रकार शब्द का सागर उमड़ रहा है उसकी संगत स्वयं ही तुम को शब्द सनेही बना देगी और सहानुभूति के नियम के अनुसार उनसे शब्द की कमाई का भेद लेकर अपने तन और मन से उसकी कमाई में लग जाओ। गुरु के अन्तर और बाहर में पूरी सुन्दरता के साथ शब्द अपना प्रकटाव कर रहा है वहाँ वह परमार्थ के रूप में है। तुम भी शब्द स्वरूप हो परन्तु तुममें शब्द का प्राकट्य सुन्दरता के साथ नहीं है। तुम लड़ाई-झगड़ों, ईर्ष्या-द्वेष, मेरे-तेरेपने और साम्प्रदायिक वादविवाद में पड़े रहते हो, तुमको अपने अन्तर शब्द के बारे में पता नहीं। तुम अपने आपको गुरु के आधीन करके शब्द का भेद लो और तन और मन से उसकी कमाई में लग जाओ। यह हिदायत है।

नोट :—हज़ूर दाता दयाल जी कहा करते थे :—

बाग के पास खुशबू, पानी के पास से ठंडक, आग के पास से गर्मी और चिराग के पास से रौशनी मिलती है। सच्चे सद्गुरु की संगत से शान्ति मिलती है। इसी तरह बुरे आदमी की संगत से बुराई, दुर्वचन बोलने वालों की संगत से दुर्वचन और क्रोधी के मिलाप से क्रोध, गाली-गलोच का दुःख मिला करता है।

जनरल सेक्रेटरी

सत्संग परमसन्त परमदयाल

पं० फकीर चन्द जी महाराज

21 - 5 - 1980

पाँच नाम की व्याख्या

दाता दयाल ने कहा फ़कीर, सत्संग सुबह पाँच बजे होगा। सुबह जब पाँच बज गये तो दाता कहने लगे दरवाज़ा बन्द कर दो। अन्दर बीस आदमी थे। पन्द्रह मिनट के बाद सुनाम का एक लखपति आदमी राम स्वरूप आया उसने दरवाज़ा खटखटाया। एक ने पूछा, कौन है? आवाज़ आई, राम स्वरूप। दाता ने कहा, दरवाज़ा मत खोलना। लोगों ने कहा कि महाराज यह लखपति आदमी है, यह रोज़ आता है रुपया भी देता है, क्या करें? उन्होंने कहा अच्छा दरवाज़ा खोल दो। दरवाज़ा खोल दिया, वह अन्दर आया। दाता दयाल ने कहा कि राम स्वरूप, जो शख़्स वक्त की क़दर नहीं करता वह हमेशा ही नाक़ामयाब रहता है। राम स्वरूप ने कहा कि आज रोटी सभी की मेरे घर होवे। मैंने दाता को कहा कि राम स्वरूप कह रहा है कि रोटी मेरे घर होवे, यह लखपति आदमी है। दाता ने मुझसे कहा,

फ़कीर क्या तेरे घर में मेरे लिए टुकड़ा नहीं है ? इतने में पीछे से राम स्वरूप आ गया। दाता ने राम स्वरूप को कहा कि भाई ! तुम अमीर, हम फ़कीर। तुम्हारा, हमारा क्या मेल ? सन्तमत कुछ और चीज़ है, Socialim कुछ और चीज़ है। यहाँ जो सत्संग है यह Socialism का है। सन्तमत का सत्संग नहीं है। बात सच्ची कहता हूँ। केशवनाथ आये वह कहने लगे कि आपको यह नहीं, यह कहना है लेकिन मैं वह कहूँगा जो मौज़ कहलवायेगी। ज़ाती ग़रज़ कोई नहीं है। यह सत्संग कराके मैं यह समझता हूँ कि मैं स्यापे में पड़ गया, मै स्यापा पीटता हूँ, मैं बाहर जाने को स्यापा समझता हूँ। आप पूछोगे कि स्यापा क्यों समझते हो ? बात यह है दोस्तो ! मैं था ब्राह्मण, बचपन से राम, कृष्ण सबको मानने वाला था। कुछ ग़लतियाँ मैंने की थीं उनका पछतावा था। राम से मिलने की तमन्ना दिल में पैदा हुई, एक दृश्य मुझे दाता दयाल के चरणों में ले गया। उन्होंने मुझे राधास्वामी मत, सन्तमत की तालीम दी और कहा कि अगर तू राम को मिलना चाहता है तो सन्तों के मार्ग पर चल। मैं सन्तों के मार्ग पर चला। १९०५ में मैंने नाम लिया, १९१६ तक न प्रकाश खुला न शब्द खुला। सिवाय रोने-पीटने के मेरे पास कोई काम न था। उस वक्त मुझे पता नहीं लगता था अब लगता है कि शब्द और प्रकाश क्यों नहीं खुला। मेरी शादी १३ वर्ष की उम्र में हो गई। १६ वर्ष की उम्र में मैं गृहस्थ में फँसा। तो जो शख़्स अपने ब्रह्मचर्य को वक्त से पहले ज़ाया करते हैं वह सिर पटक कर मर जायें उन्हें सन्तमत की तालीम का कोई हक़ नहीं, न वह वहाँ पहुँच ही सकते हैं। पहली लड़ाई में बसरे-बग़दाद चला गया। बारह साल वहाँ रहा, औरत मेरे पास थी

नहीं। मैंने बसरा और बग़दाद सारा शहर नहीं देखा सिर्फ़ इस ख़्याल से कि वहाँ ख़ूबसूरती बहुत थी, ऐसा न हो कि मेरा मन विचलित हो जाये, मैं दाता को क्या मुँह दिखाऊँगा। उस वक्त मैंने तमाम दर्ज़े पास किये। मैं आपको आपबीती बता रहा हूँ, लोगों की बीती नहीं बताता न मैं किताब की लिखी बताता हूँ। मैंने किताब पढ़ी दिल की। राधास्वामी मत में सिर्फ़ तीन चीज़ें हैं—(१) पूरा सत्तगुरु, (२) उसकी संगत, (३) उसका प्रेम। बाकी सन्तमत की कोई किताब नहीं है। किताबें जो लिखी जाती हैं वे रोचकता पर लिखी जाती हैं, उनमें हक़ीक़त और असलियत नहीं होती है। किताब लिखने वाला किताब में सिफ्तें तो सब लिख देता है मगर उसके अवगुण दर्ज़ नहीं करता।

मुझे यहाँ इतने शख़्स मिलते हैं परन्तु मैंने दो आदमियों को ही अधिकारी समझा, एक को ज़्यादा दूसरे को थोड़ा। तो मैंने बसरे-बग़दाद में बीनें इतनी सुनीं कि मुझे ऐसा लगता था कि सारे बग़दाद में बीनें ही बीनें बज रही हैं। रौशनी की यह हालत थी कि ऊपर से रजाई लेने पर भी मैं रौशनी में छत की कड़ियाँ गिन सकता था। जब मैं बारह साल के बाद बग़दाद से वापिस आया तो मुझे बड़ा अहंकार हो गया कि मैंने बीनें सुनी हैं, रौशनी देखी है, मेरे में यह हो गया, मेरे में यह हो गया, मुझे बड़ी खुशी थी। जब आया दाता को मत्था टेका तो मुझे देखकर कहने लगे कि धूप में चल, देखूँ तूने क्या कमाई की है। मैं धूप में गया, पाँच मिनट देखते रहे कहने लगे, योगी हो गया, सिद्धि शक्ति आ गई, अकड़पना बहुत हो गया मगर अभी तक सन्तपना या फ़कीरी नहीं आई। अब मेरा सारा का सारा अभिमान चला गया, मैं निराश हो गया। मुझे निराश

देखकर कहते हैं कि मैं तुम्हारा इम्तिहान कल लूंगा। मैंने यह सोचा कि पूछेंगे कि त्रिकुटी में क्या होता है? सुन्न में क्या होता है? मैं तो इन बातों के लिए तैयार था। सुबह हुई मैंने लंगर के खाने के लिए कद्दू छीला, पतीला आग पर रखकर उसमें घी डाल दिया। अन्दर से आवाज़ आई—फ़कीर, मैं बनाऊंगा। वह आये चौके में बैठ गये। एक मिनट में उन्होंने पचास हुकम दिये—नमक लाओ, मिर्च लाओ, हल्दी लाओ, यह लाओ, वह लाओ। अब मैं हल्दी को लेने के लिए दौड़ूं तो वह दूसरा हुकम दे दें मतलब मैं कोई भी चीज़ उन्हें न दे सका। पतीले के घी में आग लग गई उन्होंने पतीले को ढक्कन से ढका और चले गये। मैंने खाना बनाया, खिलाया, बरतन साफ़ किये। शाम को मैं पंखा कर रहा था, मैंने कहा आपने मेरा इम्तिहान नहीं लिया? कहने लगे तुम इम्तिहान में फेल हो गये। मैंने कहा, कैसे? कहने लगे मैंने सुबह इतनी चीज़ मांगीं तुमने एक भी नहीं दी। मैंने कहा, जी आपने इतनी जल्दी-२ कहा कि मैं घबरा गया। कहने लगे कि बेवकूफ़ न घबराना ही फ़कीरी है। कहने लगे कि गुरु नानक बहुत अच्छे फ़कीर थे वह एक जगह गये ऊपर से पहाड़ गिरा। पहाड़ को ठहरना ही था मगर चेलों का विश्वास था कि उन्होंने पहाड़ को रोका। मगर उनमें इतना हौसला था, इतनी हिम्मत थी, इतनी फ़कीरी थी कि वह वहाँ से उठे नहीं। कहने लगे कि मन को इस तरह से रखना ही फ़कीरी है। यह मैं सन्तमत का मंज़िले-मक़सूद बता रहा हूँ। मैं दाता दयाल का बड़ा प्रेमी था। मैं उनके पास देहली गया। चार सत्संगी थे, कहने लगे कि मैं एक कहानी डाल रहा हूँ जो शख़्स हँसेगा नहीं मैं समझ लूंगा कि वह फ़कीर हो गया है। उन्होंने कहानी सुनाई, मैंने

बहुतेरा हँसी को रोका मगर वह रुकी नहीं। जब कहानी ख़तम हुई तो कहने लगे कि तुम फेल हो गये। वाणी भी यही कहती है कि जिसको हर्ष-शोक नहीं व्यापे वही फ़कीर है, वही सन्त है। मेरा तर्ज़बयान कुछ और है और दूसरों का कुछ और है मगर बात वही है। लाख कोई कानों में उंगली डालकर अभ्यास करे, शब्द सुने मगर सन्त नहीं है। मैंने बहुतेरा किया। १२ साल बाद जब मैं आया तो दाता ने मुझसे कहा कि तुम्हारे औलाद नहीं है तुम औलाद पैदा करो, अभ्यास छोड़ दो। मैंने ग़लती यह खाई कि यदि मैं औरत के पास औलाद पैदा करने के लिए जाता तो मुझे तकलीफ़ न होती मगर मैं तो स्वाद में फँस गया था। आपको सच्ची बात कहता हूँ और फिर अभ्यास करता रहा उसका effect यह हुआ कि मैं अशान्त हो गया, मेरा हाज़मा खराब हो गया। उस वक्त का हाज़मा खराब होने का effect आज तक है। मैंने तीन साल रोटी, आलू, चावल और दालें नहीं खाईं। तो जो आदमी ज़्यादा अभ्यास करता है और ज़्यादा विषय भोगता है उसकी तक़दीर में हाज़मे का खराब होना लिखा है कोई रोक नहीं सकता है। तो मंज़िले अभ्यास क्या है? बेग़मी और बेफ़िक्री मगर यह बेग़मी और बेफ़िक्री हर शख़्स को नहीं आती। कोई किसी फ़िक्र में मुब्तला है, कोई किसी फ़िक्र में मुब्तला है, किसी को मुक्ति की ख़्वाहिश है, किसी को शान्ति की ख़्वाहिश है, किसी को ईश्वर से मिलने की ख़्वाहिश है, किसी को दौलत की ख़्वाहिश है। इसवास्ते यह गुरुमत है, जो कुछ गुरु कहता है वह करो। यह नहीं कि जो सत्संग में कहता है वह करो, जो तुमको ख़ास कहता है वह करो :—

गुरु जो कहें, सो हितकर मान ।
गुरु जो कहें, सो चित्तकर ध्यान ॥

इसवास्ते सन्तमत में जो कुछ है वह गुरु है। सबके लिए एक ही हुकम नहीं है। मैं आपको अपने भाई की मिसाल देता हूँ। मुझे यह हुकम है कि अगर तुझे कोई एक थप्पड़ मारे तुम दूसरा गाल उसकी तरफ कर दो। मेरा छोटा भाई राय साहिब Undermatric था। जब वह आठवीं में पढ़ता था तो वह लाहौर जाकर नाम ले आया। दाता ने कहा कि तुमको नाम जपना नहीं है, तुमको संस्कार दे दिया, सोलह घण्टे काम करो, छः घण्टे सोओ, एक घण्टा सुबह, एक घण्टा शाम ज़िन्दगी की ज़रूरियात के लिए। उस लड़के ने सोलह घण्टे काम किया, राय साहिब का खिताब पाया। ढाई हज़ार तनख़्वाह पर रिटायर हुआ। पिछली उमर में संन्यासी हो गया और दाता दयाल जी की बीस किताबें उर्दू को अंग्रेज़ी में Translate कीं। मेरी औरत थी। मैं बारह साल बसरे-बग़दाद रहा औरत की तरफ से लापरवाह हो गया, जो चाहता उसको दबा लेना। जिस औरत का ख़सम अपनी औरत को प्यार नहीं करता उस औरत को दूसरी औरतें हमेशा तंग करती हैं। मेरी औरत ने दाता दयाल जी को चिट्ठी लिखी कि मेरा खाविंद मुझे छोड़ गया है और मुझे यह-२ तकलीफ़ें हैं। उन्होंने जवाब दिया कि जो तुमको एक ताना दे तुम उसको सोलह ताने गिनकर सुनाओ। मैं आपको बताता हूँ कि सन्तमत क्या चीज़ है? आप सब किताबों के कीड़े हैं, गुरुमत किताबों का कीड़ा नहीं है। राधास्वामी मत में ज़िन्दा गुरु की ज़रूरत है वह तुम्हारे हालात को बेहतर जानता है और उसी के मुताबिक तालीम देता है। १९३१ में दाता दयाल जी कश्मीर गये।

सत्संग हुआ, सत्संग में कश्मीरी पण्डित भी थे। हम तो कहते हैं राधास्वामी। दाता दयाल ने कहा "हिंसा परमो धर्मः" एक आदमी ने कहा, महाराज! अहिंसा परमो धर्मः" है, 'हिंसा परमो धर्मः' नहीं है। दाता दयाल ने कहा, नहीं! तुम्हारे वास्ते 'हिंसा परमो धर्मः' है। मरो और मारो। उसने कहा कि क्या मतलब आपका? दाता ने कहा तुम पर मुसीबत आने वाली है सारे पण्डितों का और हिन्दुओं का संगठन करो। मुसलमानों का मुकाबला करना है। औरतें आईं कश्मीरी चोगे पहने थीं। दाता ने कहा चोगे उतार दो यहाँ चाकू रखो, सलवार कुर्ता पहनो। वह तो चले आये। पीछे से हिन्दु मुसलमानों का झगड़ा हुआ, हिन्दुओं ने संगठन किया हुआ था इसलिए जीत गये। इसवास्ते गुरु वह है जो वक्त के अनुसार हर शख़्स को अलग-२ तालीम देता है। सबके लिए एक तालीम नहीं है। मैंने आपको सच्ची बात बता दी जो मैंने समझी। अब मैं जनरल सत्संग कराऊंगा—राधास्वामी मत में लिखा हुआ है :—

राधास्वामी दयाल प्रगटे जग में,
सन्त रूप अवतार धार।
जिन-२ माना वचन समझ कर,
तिन का किया उद्धार।

सन्तमत की वाणी क्या है? आपमें से कई राधास्वामी मत के होंगे। वह कहते हैं कि तीन चीज़ें हैं (१) माया (२) काल (३) दयाल यानि दयाल देश, काल देश और माया देश। यह तीन चीज़ें राधास्वामी मत वाले या सन्तमत वाले बताते हैं। जब तक हम माया देश और काल देश से निकलकर दयाल देश में नहीं जायेंगे तब तक हमारा आवागमन ख़तम नहीं होगा। यह है राधास्वामी मत की

जनरल तालीम। इसलिए जो गुरु कहता है वह करो। अब हमको मिला है नाम। नाम के क्या मायने हैं? वही जो गायत्री मन्त्र में हैं कि जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति को छोड़-कर अपने अन्दर प्रकाश को देखो :—

ओम् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो
देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति से परे जो सावित्री-सूरज है उसे देखो। हमारे यहाँ क्या है? सहस्रदल कमल यानि प्रकाश को देखो, त्रिकुटी को देखो उसमें लाल सूर्य चमकता है जो ज्योतिःस्वरूप होता है। तो जब तक कोई आदमी इनसे आगे नहीं जायेगा उसका आवागमन खतम नहीं होगा। हजूर बाबा सावन सिंह जी फ़रमाया करते थे—दस द्वारे लंघो तब आगे सत्तगुरु होगा। वह दस द्वारे कौन से हैं? कोई कुछ कहता है, कोई कुछ कहता है। जो मैंने समझा वह मैं कहता हूँ—पाँच कर्मेन्द्रियाँ, पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ। इनका एहसास अपने अन्तर न करना, इनको भूल जाना और उससे परे चले जाना इसका नाम है दसवें द्वार से आगे जाना। आप लोग शराब पीते हो, मांस खाते हो, विषय कमाते हो अब बताओ। कबीर ने साफ़ लिखा है :—

जहाँ काम वहाँ नाम नहीं,
जहाँ नाम तहाँ नहीं काम।
रवि रजनी दोनों न मिलें,
एक ठौर एक याम।

अब अगर मैं उन आदमियों के साथ जो सुबह से शाम तक विषय कमाते हैं वायदे करूँ तो क्या मैं Rightfull हूँ? नहीं। इसके मायने यह मत समझना कि यह सब ग़लत है। यदि काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार तुममें नहीं हैं

तो तुम ज़िन्दा नहीं रह सकते, इनका जो स्थूल अंग है वह Under control होना चाहिए। अगर आप दुनिया से पार जाना चाहते हैं तो उसके लिए और मार्ग है और जो दुनिया में जीना चाहते हैं उसके लिए और मार्ग है। दो मार्ग हैं। यदि कोई शख़्स आवागमन से छूटना चाहता है कि हम फिर न आयें तो उसको दसवें द्वार से आगे जाना चाहिए। अगर दुनिया चाहते हो तो उसके लिए वेद मार्ग है 'शिवसंकल्पमस्तु'। वह मैं क्यों कहता हूँ क्योंकि मेरी आज़माई हुई बात है। जब तुम रात को सो जाते हो, स्वप्न में कोई डरावना स्वप्न देखते हो तुम्हारी ज़बान बड़बड़ाती है, तुम किसी को मुक्का मारते हो तुम्हारा हाथ हिल जाता है, तुम स्वप्न में ख़्याली औरत बना लेते हो तुम्हारा वीर्यपात हो जाता है। जब स्वप्न का ख़्याल तुम्हारे वश में नहीं है कि तुम अपनी मर्ज़ी के मुताबिक स्वप्न देखो। जिस किस्म के संस्कार तुम्हारे दिमाग़ में पड़े हुए हैं उस किस्म के स्वप्न तुम्हें आयेंगे। मैं हूँ, मुझे भी स्वप्न आते हैं। स्वप्न में मन्दिर कभी नहीं आया, तुम लोग नहीं आये, सत्संगी नहीं आये, अमेरिका नहीं आया मगर माँ, बाप, औरत, बग़दाद के तार का महकमा, रेल यह ज़रूर आता है क्योंकि वहाँ मैंने अपना पेट भरने के वास्ते दिल लगाकर काम किया था इसवास्ते स्वप्न में आते हैं। यह जो मेरा काम है यह मेरा निष्काम है इससे मेरी ज़ाती ग़रज़ कोई नहीं है इसवास्ते यह स्वप्न में नहीं आता। तो जब हमारे स्वप्न के ख़्यालात, जो हमारी नीयत में नहीं थे उनका असर हमारे जिस्म पर पड़ता है तो जो कुछ हम जाग्रत में करते हैं किसी से दुश्मनी, किसी से झगड़ा, किसी की निन्दा, किसी की बुराई तो इसका असर तुम्हारे जिस्म पर क्यों न

पड़ेगा ? वही कर्म बन जायेगा। मेरे गुरु महाराज ने १९३३ में बड़े सत्संग में कहा था "फ़कीर, ज़माना बदल जायेगा तुम चोला छोड़ने से पहले तालीम बदल जाना" उन्होंने मुझे यह नहीं कहा कि क्या करना है, क्या नहीं करना है। १९३९ में दाता ने चोला छोड़ा था। मैं १९४२ में छुट्टी लेकर हज़ूर बाबा सावन सिंह जी के पास गया। व्यास स्टेशन पर पैरों से जूतियाँ उतार कर फेंक दीं क्योंकि हमारे यहाँ लिखा हुआ है कि सन्त के पास अदब से जाना चाहिए। तो मैं धूप में नंगे पाँव गया। मैंने उनसे कहा कि महाराज ! मेरे ज़िम्मे यह काम है आप हुकम दे दें मैं काम नहीं करूँगा। उन्होंने कहा, क्यों ? मैंने कहा कि मैं सच कहूँगा। कहने लगे, दुनिया सच की अधिकारी नहीं है। मेरे पास हज़ारों आदमी आते हैं कोई कहता है मेरे लड़का नहीं है, कोई कहता है कि मेरे घाटा पड़ा हुआ है, कोई कुछ कहता है, कोई कुछ कहता है। परमार्थ की ज़रूरत किसे है ? मेरा डेरा है मैं इसलिए सच नहीं कह सका मगर तुम निर्भय होकर काम करो, मैं तुम्हारे पुश्त-ए-पनाह रहूँगा। यह उनके लफ्ज़ थे। इसलिए मैंने सच्चाई से काम लिया। गो चूँकि मैं बहुत तालीम याफ्ता नहीं मेरे अल्फ़ाज़ जो हैं वह बहुत नरमाना या चापलूसी के नहीं होते, मैं डण्डेमार हूँ जो बात होती है साफ कह देता हूँ। जो लफ्ज़ मुझे मिलते हैं मैं उनके आधार पर कह देता हूँ तो यह जितने दर्जे हमारे अन्तर के हैं ये सारे के सारे मन के दर्जे हैं। आप देखो हिन्दु भी अभ्यास करते हैं और मुसलमान भी अभ्यास करते हैं। क्या किसी हिन्दु को अपने अन्तर में मोहम्मद नज़र आया या किसी मुसलमान को राम, कृष्ण नज़र आया ? नहीं आया न ! क्योंकि उनका उनको ख़्याल नहीं मिला।

तुम स्वप्न देखते हो क्या कभी तुमको स्वप्न आया कि तुम जनानियाँ हो गये और तुमने मुण्डे पैदा किये हैं ? क्या कभी औरतों को यह स्वप्न आया कि वह मर्द हो गईं। नहीं आया न ! जिस किस्म का ख़्याल इन्सान के दिमाग़ पर होता है कुछ पिछले जन्मों के कर्मों के अनुसार, कुछ इस जन्म में पढ़ने से, देखने से, सुनने से आता है। अभ्यास है क्या ? प्रकाश और शब्द। पहला दर्जा तुम्हारा सहस्राकार, दूसरा ओंकार, तीसरा रारंगकार, चौथा सोहंकार, पाँचवाँ सत्याकार यही हैं न आपके पाँच नाम। सहस्राकार क्या है ? तुम्हारे मन के अन्तर से हज़ार किस्म के ख़्यालात निकलते रहते हैं इनको बोलते हैं अनेक प्रकार के ख़्यालात। इनको रोकने के लिए सिवाय अजपाजाप के और कोई तरीक़ा नहीं है। ज़बान से राम-२ करोगे मन कहीं और जायेगा। सवाल यह है कि जिस समय तुम अजपाजाप करते हो उस वक्त तुम्हारा मन किसी और तरफ़ नहीं जाना चाहिए। अब आप कहोगे कि हमारा जाता है, अरे जाये क्यों न ! आप लोगों की ख़राक कैसी है ? विषय-विकार की ज़िन्दगी, दुनिया की लालसाएँ, दुनिया की आशाएँ तो तुम यह कैसे उम्मीद कर सकते हो कि तुम्हारा मन ठहरेगा। तुम देखो जितना Female है—जानवरों का, हंसों का, कीड़े-मकौड़ों का, वक्त से पहले मादा अपने पास नर को नहीं आने देती न नर ही जाता है और एक आदमी है न दिन देखता है, न रात देखता है, न सुबह देखता है, न शाम देखता है फिर यह उम्मीद करता है कि हमारी सुरत चढ़ जाये, यह कैसे हो सकता है ? एक Difficulty तो यह है, दूसरी यह कि हमारा आहार ठीक नहीं है। हमारे ऋषि बेवकूफ़ नहीं थे जिन्होंने सतोगुणी भोजन अभ्यासियों के लिए बताया।

देखो, पिछले ज़माने में जो अभ्यासी होते थे अगर घर में कोई विधवा होती थी तो उसके हाथ की पकी रोटी नहीं खाते थे। हरएक आदमी जिस किस्म के ख़्यालात रखता है उस किस्म का विचार उसके मन से निकलता है। Human body is a Radio Station. यह साइन्स ने सबूत दिया है। पुलिस के कुत्ते होते हैं जहाँ डाका पड़ता है या क़त्ल होता है वहाँ पर डाकू की कोई चीज़ रह जाती है उस चीज़ को कुत्ते को सुँघा देते हैं और कुत्ता उसकी गन्ध से डाकू को पकड़ लेता है। इसवास्ते कहा जाता है :—

'हुई पवित्र जहाँ सन्त पग धारे'

बशर्ते कोई सन्त हो। जैसा कोई होता है उसके अन्दर से वैसे ही ख़्यालात निकलते हैं। अब तो ज़माना बदल गया पहली औरतें जेठ के बिस्तर पर, बाप के बिस्तर पर, ससुर के बिस्तर पर, भाई के बिस्तर पर नहीं बैठती थीं वह अपने बिस्तर पर या पति के बिस्तर पर ही बैठती थीं क्योंकि जो जैसा होता है वैसा ही उसका असर उसके पहने हुए कपड़ों में होता है। इसीवास्ते सन्त की शोभा लिखी गई है बशर्ते कोई सन्त हो। मैं सन्त नहीं हूँ मैंने सन्तमत को समझा है मगर बाज़ेवक्त जब ज्ञान भूल जाता हूँ तो मैं भी गिर जाता हूँ, बात आपको सच्ची कहता हूँ। Sex में तो गिरता नहीं, ६४ साल का हूँ मगर दुनिया की चीज़ में गिर जाता हूँ। कैसे ? मैं मन्दिर का Incharge हूँ। तीन अस्पताल हैं। कभी एक, दो दफ़ा अपनी बीमारी के लिए ज़रूरत पड़ी कहा कि जाओ डाक्टर को बुला लाओ। अब वह डाक्टर आया मैंने डाक्टर को बुलाया है वह मेरा गिरना है क्योंकि मेरा कोई Right नहीं है अपने इलाज के लिए अपने कमरे में बुलाने का। वह Temple का नौकर है। अगर मुझे

जरूरत है तो उसके कमरे में जाना चाहिए। इस किस्म की बहुत सी बातें हैं जिनसे मैं अपने आपको गिरा हुआ पाता हूँ। मैं आपकी रोटी खा जाता हूँ झूठ नहीं बोलता आपसे। सहस्रदल कमल है क्या? अनेकवाद। यह अजपाजाप से जायेगा। यदि अजपाजाप में आपका यहाँ दिल नहीं लगता है तो नाम माला जपा करो। यहाँ कन्नी में जाप करने से तुम्हारा मन ठहर जायेगा अगर इस तरह भी न ठहरे तो नाक की चोंच पर ध्यान किया करो। मैं तो अब देख ही नहीं सकता हूँ क्योंकि मेरी सुरत हमेशा ऊँची चढ़ी रहती है। सन्त किसी पन्थ के या मज़हब के बाली नहीं होते। अब सिखों ने गुरु नानक को अपना समझा हुआ है मगर गुरु नानक सारी दुनिया के थे। सहस्रदल कमल में घण्टा बजता है। क्या यहाँ कोई घण्टा रखा है? नहीं। जिस तरह से हम बाहर में मुख्तलिफ़ धातुओं को इकट्ठा करके घण्टा बना लेते हैं और उस पर चोट मारते हैं तो घण्टा बजता है इसी प्रकार हमारे दुनियावी जो ख़्यालात हैं, दुनिया की ख़्वाहिशात के जो ख्यालात हैं जब वह इकट्ठे होते हैं तो उनके इकट्ठा होने से घण्टे की आवाज़ आती है। अगर इन्सान अभ्यास करे तो यह छः महीने का कोर्स है मगर इसको पूरी लगन चाहिए। हम लोगों की लगन नहीं है क्योंकि हम लोग तो सुबह से शाम तक रुपयों के पीछे दौड़ते हैं।

आगे है त्रिकुटी। त्रिकुटी में क्या होता है? त्रिकुटी में है ध्येय, ध्याता और ध्यानो, एक गुरु का स्वरूप, एक तुम और तुम्हारा प्रेम। जब तुम गुरु के स्वरूप को बग़ैर आँख बन्द किये लगातार देखोगे यानि ख़्याल को लगातार आगे-पीछे किये हुए तो तुम्हारे चेहरे पर लाली आयेगी। जब

अन्तर में मन मूरत बनाता है तो मूरत बनाने में ज़ोर लगता है, इस ज़ोर से बारीक-२ नाड़ियों में खून चलता है, उस खून की वज़ह से तुम्हारी आत्मा का रंग लाल हो जाता है और जो ज़्यादा देर तक इस लाल रंग में अभ्यास करते हैं उनके दिमाग़ खराब हो जाते हैं या नज़र कमज़ोर हो जाती है। यह मेरा तजुर्बा था मगर उसकी Verification किसने की ? Be Man Temple का President है उसका एक दोस्त था जो राय सालिग राम साहिब का चेला था। उसने राय सालिग राम साहिब के हाथ के दस्तखत की चिट्ठी भेजी। उसमें लिखा था कि त्रिकुटी में ज़्यादा देर लाल रग में अभ्यास करने से दिमाग़ में खराबी आ जाती है और नज़र में कमज़ोरी आ जाती है। यदि आपमें प्रेम नहीं है तो आप मूरत नहीं बना सकते हैं। इसवास्ते सन्तों के मार्ग में प्रेम की महिमा है। जिनमें प्रेम नहीं है उनको यह साधन नहीं करना चाहिए। जो शख़्स बिना इश्क के चलते हैं वह अपना दिमाग़ खराब करते हैं।

रारंग में क्या होता है ? बादल गरजता है जिसको ॐ बोलते हैं, बम-२ बोलते हैं, मुसलमान अल्लाहू बोलते हैं, सिख वाहेगुरु बोलते हैं। वह क्यों होता है ? जिस तरह से सूरज हवा द्वारा समुद्र के पानी को आसमान पर बादल बना देता है और जब वह बादल आपस में रगड़ा खाते हैं तो बादल की गरज होती है ऐसे ही हमने अनेक प्रकार के ख्यालात छोड़ दिये और अपने अन्तर में गुरु के साथ प्रेम रखा, इससे हमारे ख्यालात तन गये इस कारण हमारे अन्तर में बादल गरजता है, उसमे बिजली चमकती है, Light होती है। तुम ग़ौर आँख झपके किसी चीज को देखते रहो, देखते रहो तो वह चीज़ तुम्हारे सामने आ जाती है। उसका

नाम है 'संकल्प समाधि'। तुमने कहा था कि पाँच नाम की व्याख्या कर दो मैं अपनी समझ के मुताबिक कर रहा हूँ। मैं यह दावा नहीं करता कि मैं जो कुछ कह रहा हूँ वह ठीक है। पाँच नाम के बग़ैर कोई भी आगे नहीं जा सकता है। इसका जाना बिल्कुल आसान है अगर गुरु मिल जाये और आसान रास्ता मिल जाये। अब आगे क्या होता है? जैसे तुम शादी करने जाते हो, मां-बाप, रिश्तेदार, बाजे, घोड़ी, जेवर, कपड़ा सब ले जाते हो। दुल्हन को ले आते हो और तो सब चले जाते हैं एक तुम होते हो एक तुम्हारी बीबी होती है तुम उसको देखते हो वह तुम्हें देखती है। ऐसे ही इन्सान अपने अन्तर में प्रेम से गुरु के रूप को देखता है तो एक तुम रह जाते हो एक गुरु का रूप रह जाता है। इसमें वृत्तियाँ तनी होती हैं। सुरत इसमें रहती है। इसमें आवाज़ जो होती है वह रारंग-सारंग तथा सारंगी की होती है। इसके आगे क्या है? बाहर में तुम बिना आँख झपके किसी चीज़ को लगातार देखते रहो तो वह चीज़ तुम्हें नज़र आनी बन्द हो जायेगी ऐसे ही जो आदमी इस तरह से अभ्यास करते हैं वह महासुन्न में चले जाते हैं। इसका नाम निर्विकल्प समाधि है। इसमें अंधेरा आयेगा। अंधेरे के मायने हैं मन, चित्त, बुद्धि अहंकार यह चारों नहीं रहते। चार स्थान गुप्त हैं किसी सन्त ने नहीं खोले। इसके आगे फिर गुरु मिलता है वह तुमको इस मन से छुड़ाकर आगे ले जाता है। मुझको वह पता नहीं लगता था। दाता को तंग किया करता था। उन्होंने १९१८ में मुझ यह काम दिया था और कहा था कि तुमको सच्चा सद्गुरु सत्संगियों के रूप में मिलेगा। जब सत्संगियों ने मुझसे कहा कि मेरा रूप प्रकट होता है और मेरे सिर से बिजली निकलती है और मैं

नहीं होता तो मुझे यक़ीन हो गया कि मेरे अन्तर में जितने ख़्यालात पैदा होते थे वे सब संस्कार थे, असलियत में नहीं थे। अब मैं अभ्यास करता हूँ मन के रूप को छोड़ जाता हूँ न गुरु का रूप रहता है न कोई शक्ल रहती है। जब कभी आपके ख़्यालात मेरे दिमाग़ पर पड़ते हैं तब मैं सुमिरन भी करता हूँ और ध्यान भी करता हूँ मगर आमतौर पर नहीं करता चूँकि प्रकाश और शब्द है। प्रकाश और शब्द को देखने, सुनने की जो अवस्था है उसका नाम है सोहंगपुर। वृत्ति वहाँ ठहरती है मगर फिर उतर आती है, मोड़तिया फिर मोड़ता है और वह फिर उतर आती है इस प्रकार आने-जाने के कई चक्कर लगते हैं उसका नाम है भँवरगुफा। अब वहाँ पहुँच गये अगर हमारा अभ्यास ज़्यादा है तो हमारा आद क्या हुआ ? शब्द और प्रकाश (Light and Sound)। मैं अब Light and Sound में उस चीज़ को देखने की कोशिश करता हूँ जो Light को देखती है और Sound को सुनती है। कभी दो महीने में, तीन महीने में वह जगह आ जाती है एक मिनट के लिए, डेढ़ मिनट के लिए, न वहाँ मैं हूँ न कोई और है। राधास्वामी मत में जेठ महीने में लिखा हुआ है :—

जेठ महीना जेठा भारी, जीवन हिरदे तपन करारी।
सन्त दयाल जीव हितकारी, भेद कहें वह निज कर भारी॥
नहिं ख़ालिक मख़लूक़ न खिल्कत, कारण काज न दिक्कत।
राम रहीम करीम न केशो, कुछ नहिं कुछ नहिं था सो॥
अल्लाह हुज़ूर खुदा न होते, पीर मुरीद न दादा पोते।

ऐसे-२ शब्द हैं। आख़िर में वह लिखते हैं कि जहाँ हमें पहुँचना है वह क्या अवस्था है :—

नहिं सतनाम न नाम अनामी।

तो मैं किस नतीज़े पर आया कि मैं वहाँ चौबीस घण्टे तो ठहर नहीं सकता। कभी एक मिनट के लिए, कभी दो मिनट के लिए, दो या तीन महीने बाद समाधि लगती है। मैं किस नतीज़े पर आया कि मैं कौन हूँ? मैं एक चेतन का बुलबुला हूँ। उसकी लीला को किसी ने नहीं जाना :—

तेरी लीला कौन समझे, तू तो अपरम्पार है।
एक दृष्टि से तेरी, दुखियों का बेड़ा पार है॥
दुःख में सुख रहता है तो, हमको नया कुछ भी नहीं।
मौज की क्या जीव जाने, दुविधा का सिर भार है॥

अब मैं महसूस करता हूँ कि मैंने ज़िन्दगी में जो कुछ किया यह काल और माया है। अक़ल नहीं थी, समझ नहीं थी अब यह समझ आई जो लिखा हुआ है। एक परमतत्त्व आधार है उसमें हरक़त होती है, शब्द होता है। शब्द में जो चेतनता पैदा होती है वह हम जानते हैं। जब शब्द से अशब्द गति में जायेंगे तो न हमें पता होगा समुद्र की बूँद समुद्र में गई उसी में चले जायेंगे। जितना मैंने काम किया है अब मैं महसूस करता हूँ कि मैं ग़लती पर था इसवास्ते गुरु की महिमा है। गुरु ने उन ग़लतियों को दूर करके हमको सही रास्ता बता कर के हमारे साथ ऐसा सलूक़ किया कि हमको सही घर का पता मिल गया। जिस तरह मां छोटे बच्चे को छाती से लगाती है, नंगी होती है अपना दूध पिलाती है जब वह बच्चा बड़ा हो जाता है तब मां उसके सामने छाती नहीं खोलती न अपना दूध पिलाती है। मगर लड़के का क्या फ़र्ज़ है कि जब तक मां जिन्दा है उसकी सेवा करे, उसकी आज्ञा में रहे, उसको इज़्ज़त करे, उसका बड़प्पन रखे। इसी तरह से जब यह अज्ञान दूर हो जाता है और आदमी इस नतीज़े पर पहुँच जाता है कि मालिक

एक है और सब कुछ है जब तक वह ज़िन्दा है गुरु और पन्थ की इज़्ज़त करता है। राधास्वामी मत में मैंने यह तालीम पाई है। मैं सब राधास्वामी मत वालों की इज़्ज़त करता हूँ, मान करता हूँ उस तरह से कि यह मेरा फ़र्ज़ है, यह मेरी duty है। यह है गुरुमत जो मैंने समझा है :—

दुःख में सुख रहता है छुपकर, कष्ट का परिणाम सुख।
बन्ध में मुक्ति की छाया, मुक्ति बन्धाकार है॥

किसकी मुक्ति? कैसी मुक्ति? वहाँ से शब्द पैदा हुआ, सुरत बन गई, गुरु मिले भेद बता दिया बस हस्ती उसमें जा मिली या दूसरे मायने यूँ कर लो कि अपनी ज़ात आप ही आई और आप ही आप सब काम कर रही है। आप ही पानी है, आप ही आग है, आप ही सब कुछ है मगर हम में एक मैंपना आया हुआ है। मैंपना चार प्रकार का होता है। एक जिस्म का मैं फ़कीरचन्द हूँ मैं फलाने का पुत्र हूँ। दूसरा मैंपना यह है कि मैं सौदागर हूँ मेरे पास इतना रुपया है, मैं ठेकेदार हूँ। तीसरा मैंपना यह है कि मैं ब्रह्म हूँ, परमात्मा हूँ। तीन तो मेरी चली गई मगर सुरत की मैं नहीं गई जब वह चली जायेगी तो खामोशी आ जायेगी। मेरे नाम शब्द है दाता दयाल का। अभी मैं उस पर आमिल नहीं हो सका :—

न अपना नाम रखना तुम, न दुनिया में निशाँ रखना।
नहीं की जब गई आदत, ज़बां पर तब न हाँ रखना॥
मुकर होना अबस है और मुनकर होना है ग़लती।
न सिर में ऐसे सौदाका, कभी बारे गिराँ रखना॥
न साहिबे दिल न बेदिल, बनने की तुममें हबिस आये।
न दिल देना न दिल लेना, न बहरे दिलस्ताँ रखना॥

अगर है तर्क तर्क कर दो, तर्क का भी तर्क बेगुमां।
मकां जब छुट गया फिर, क्यों ख़याले लामकां रखना।
खामोशी मानये दारद, कि दर गुफ्तन नमी आयद।
न सच और झूठ कहने, के लिए मुँह में ज़बाँ रखना॥

मैं अभी तक यहाँ नहीं पहुँचा अगर पहुँच जाऊंगा तब शायद आपसे बात नहीं करूंगा। Why should I talk to you ? जब मेरी सुरत की 'मैं' चली गई तो ख़तम हो गया, वह गई मैं बात को समझ गया। दुनिया में रहता हूँ, दुनिया के काम करता हूँ मगर फँसता नहीं। यही ज्ञान है। अब रह गया सन्तों का ऊँचा मुकाम :—

नानक कोटिन्ह में कोऊ नारायण जिन्ह चीन्ह।

आम दुनिया के लिए मेरी तालीम यह है कि तुम्हारे ख़्याल में ताक़त है घरों में मोहब्बत से रहो, विषय कम कमाओ। औरतें औलाद पैदा करने के लिए हैं न कि ऐश के लिए। जो आदमी जिस्मपरस्त है, जिस्म को ही देखता रहता है, जिस्म की ही परवरिश में लगा रहता है वह चमार है। आपने मुझे बुलाया मैं आया, मैंने आपको अभ्यास बता दिया। अब आसान तरीक़ा और बताये देता हूँ। जो मैंने आपको पहले त्राटक बोला है एक बात कि यहाँ कुर्बानी करनी पड़ती है कोई भी शख़्स जिसने इश्केमजाज़ी नहीं किया वह इश्केहक़ीक़ी नहीं कर सकता। इश्केमजाज़ी के मायने यह नहीं हैं कि वह औरत के भूखे हैं इत्यादि जुज़-प्रकृति की किसी चीज़ के साथ प्यार करना, कुर्बानी देना यह इश्केमजाज़ी है। मां की ख़िदमत करने वाला, अपने जिस्म, अपने धन, अपने वक्त को मां की ख़िदमत में देने वाला भी इश्केमजाज़ी कहलाता है। बाप की ख़िदमत, गुरु की सेवा, परिन्दों की सेवा करने वाला भी इश्केमजाज़ी में

है। जब तक इश्केमजाज़ी में क़ुर्बानी की आदत नहीं तुम अन्दर में कैसे जा सकते हो चूँकि बाहर में आदत नहीं है आपको किसी चीज़ के त्याग करने की, तो जब तुम अन्तर में जाओगे और जो ख़्यालात तुम्हारे आयेंगे वह तो रुकेंगे नहीं क्योंकि तुम्हारे अन्दर ताक़त नहीं है उन्हें रोकने को। जब तुम अभ्यास करने बैठोगे तो तरह-२ के ख़्यालात तुम्हारे दिमाग़ में आयेंगे इसलिए इश्केमजाज़ी है। मैं आपको इश्केमजाज़ी को मिसाल बताता हूँ। इश्क-ए-मजाज़ी कहते हैं क़ुर्बानी करना। बाबा फ़रीद ने १२ साल तप किया जब वह बाहर आया तो चिड़ियाँ चुग रही थीं कहा चिड़ियाँ मर जाओ, चिड़ियाँ मर गईं चिड़ियो जी जाओ, चिड़ियाँ ज़िन्दा हो गईं। अब फ़रीद के दिल में अभिमान हो गया कि मैंने कुछ हासिल कर लिया। वह रोटी मांगने गया और उसने दरवाज़ा खटखटाया। अन्दर से वह औरत आधे घण्टे बाद आई। फ़रीद को बड़ा गुस्सा आया। वह औरत कहने लगी कि मैं चिड़िया नहीं हूँ जो मर जाऊंगी। अब फ़रीद की आँख खुल गई। फ़रीद ने पूछा कि तुझे कैसे मालूम? उस औरत ने कहा कि जिस ज्ञान के लिए तू बारह साल टक्कर मारता फिरा मैंने दो घण्टे में हासिल किया। उसने कहा कैसे? औरत ने कहा कि मैं नई ब्याही हुई आई थी, जब खसम के पास जाने लगी तो वह चारपाई पर बैठा था। उसने कहा कि तू मुझे पानी पिला दे। मैंने पानी का कटोरा उसके हाथ पर रख दिया और उसकी शक्ल को दो-तीन घण्टे देखती रही। वह जो उसने दो या तीन घण्टे नाटक किया यानि उसकी शक्ल को लगातार देखती रही उसने उसका अनुभव खोल दिया। उसको ज्ञान हो गया इसलिए अपने अन्तर में बाअदब होकर अभ्यास करो। तुममें

बेअदबी है बेअदब कभी किसी काम को नहीं कर सकता है। जहाँ अदब नहीं है वहाँ कुछ नहीं है। गुरु तुम्हारे अन्दर रहता है बाअदब होकर अन्दर में जाओ। तुम्हारे सामने अफसर आकर खड़ा होता है क्या तुम उसके सामने कोई और बात सोच सकते हो? नहीं सोच सकते तुम्हारी सारी तवज्जह उसके मुँह की ओर लगी रहती है कि यह क्या कहेगा? ऐसे ही जब तुम अभ्यास करते हो तो जिस रूप को तुम सामने लाते हो अगर तुम उसको पूर्ण मानते हो, परमात्मा मानते हो फिर यदि तुम दूसरा ख़्याल करते हो तो तुम बेअदब हो। यह काम बेअदबों का नहीं है अदब वालों का है। दुनिया किताबें पढ़-२ कर पागल हो गई है अमल नहीं करती है। अमल के बग़ैर काम क्या है? मैं सच्चाई बयान करता हूँ। तुमने कहा कि पाँच नाम की व्याख्या करो, एक ने कहा कि तुम यह कहो! अरे! फ़कीर भी कभी किसी का क़ैदी हुआ है? Fakir is never bound by anyone. क़ुदरत जो कहलवाती है मैं वह कहता रहता हूँ। मैं जानता हूँ कि मैं ज़्यादा पढ़ा-लिखा नहीं हूँ, ज़माने की ज़रूरतों से भी वाकिफ़ नहीं हूँ। बाजे-दफ़ा मैं ऐसी बात कह देता हूँ जो मुझे Social Law के मुताबिक नहीं कहनी चाहिए मगर मेरे मुँह से निकल जाती है। Be Man Temple वालों से कहा हुआ है कि मैं जो बोलता हूँ तुम लिखते हो मगर किसी का नाम मत लिखो किसी किताब में। किसी का नाम नहीं आता, किसी गुरु का नाम नहीं आता, किसी शिष्य का नाम नहीं आता। बहुतेरों ने मुझे कहा कि आप गुरुमत का खण्डन करते हो। मैंने कहा कि कबीर का क्या हक़ था कि मेरे बुज़ुर्गों को व्यास को, वशिष्ठ को, दत्तात्रेय को, पाराशर को कि मह

नहीं पहुँचे, मोहम्मद नहीं पहुँचे। क्या मुझे यह कहने का हक़ नहीं है कि यह उनके पैरोकार हैं जिन्होंने खण्डन किया। जो ग़लती वह करते हैं कि मैं उनसे कहूँ कि तुम यह ग़लती करते हो। जब कबीर के पास हक़ था हमारे बुज़ुर्गों की ऐसीवैसी करने का तो मुझे भी हक़ है कबीर को मानने वालों से कहने का कि तुम कबीर के कहने पर चलो, तुम कबीर के कहने पर नहीं चल रहे हो। कौन आदमी है जो अपने मां-बाप की बुराई सुन सकता है? मैं ब्राह्मण होता हुआ इस पन्थ में आया, मैंने सुना सबका खण्डन ही खण्डन था। मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा। अब मैं कहता हूँ कि जो कबीर, गुरु नानक, स्वामी जी कह गये वह सोलह आना सच है। मैं उसका सबूत देता हूँ। उन्होंने सबूत नहीं दिया और मुझे इसका सबूत तुम लोगों से मिला, गुरु से नहीं मिला क्योंकि उन्होंने इशारा किया। मैं इशारे को समझ नहीं सकता था। मेरे गुरु इस उमर में आप लोग हैं जो यह कहते हैं कि मेरा रूप उनकी मदद करता है और मेरे बाप का पता नहीं होता। ऐसे-२ केस मेरे सामने आते हैं कि मेरी अक़ल चक्कर खा गई जाग्रत में। बच्चे स्कूल जाते हैं कहते हैं बाबा हम तुमको याद करते हैं। तुम आते हो मेज़ के नीचे बैठ कर पर्चे हल करा देते हो, १०० में से ९८ नम्बर आते हैं। अब तुम बताओ क्या मैं सोचने के लिए मजबूर नहीं हूँ? अगर मैं इन लोगों को सच्चाई नहीं बताऊँ तो क्या मैं मुजरिम नहीं हूँ? मेरी सच्चाई पर कौन पैसा देता है? जमह-२ बोरियाँ रुपयों से भरी जाती हैं यह नहीं कि मैं उनसे विरोध करता हूँ, मैं कहता हूँ कि सन्तमत का साफ़ बयान किया जाये ताकि जो जीव बचना चाहते हैं वह बच जायें और जिनको नहीं बचना उनको नहीं बचना।

यह है मेरा अपना ख़्याल। अब आप लोगों ने मुझे बुलाया मैं आया। आपने कहा कि पाँच नाम की व्याख्या कर दो, मैंने कर दी जो मेरी समझ में आई। अभ्यास करो, अब बुढ़ापा आ गया पोते-पोती वाले हो गये अब गृहस्थ का क्या करोगे ? मैं बेधड़क आदमी हूँ। मैं भारत में जाता हूँ वहाँ भी यही कहता हूँ कि तुम्हारी मियाँ-बीबी की चारपाई एक है, तुम्हारे पोते-पोतियां हैं, लड़कियाँ हैं, उन पर क्या असर पड़ेगा। मैं सन्त सतगुरु वक्त हूँ जिस ज्ञान की लोगों को ज़रूरत है मैं वह देता हूँ। दुनिया नहीं सुनती न सुने, ऐसी को तैसी में जाये, मैंने क्या कोई ठेका लिया हुआ है ? इसवास्ते मैंने तालीम को बदल दिया है। मैं हूँ बीनें सुनने के बाद भी अशान्त हुआ। आपको किस्से सुनाता हूँ—मैंने बीनें सुनीं, रोशनी देखी, सब कुछ किया मगर अशान्त हो गया। दो सत्संगी लाहौर से आये उन्होंने मेरे गुरुमहाराज से सवाल किया। उन्होंने कहा फ़कीरचन्द सुनाम में स्टेशन मास्टर है उससे पूछो जाकर। वह मेरे पास आये मैंने चिट्ठी पढ़ी। मैंने कहा भई ! मुझे कुछ नहीं आता मैं आप अशान्त रहा हूँ, तुम उन्हीं से सवाल करो। उन्होंने दाता को ख़त लिखा। दाता ने जवाब दिया कि यदि तुमको फ़कीरचन्द से कुछ नहीं मिला तो तुमको मुझसे भी कुछ नहीं मिलेगा। वह दो महीने बाद मेरे पास आये। मैंने वह चिट्ठी पढ़ी। धर्म से कहता हूँ कि मेरे दिल में गुरुमत के बरखिलाफ़ बहुत ही गन्दे ख़्यालात पैदा हुए। मैंने कहा कि यह कैसा गुरुमत है मैं आप अशान्त हूँ दाता लिखते हैं जिसको फ़कीरचन्द से कुछ नहीं मिला उसको मुझसे कुछ नहीं मिलेगा। मैं चूँकि एक मालिक को मानने वाला हूँ In the form of my Data Dayal Ji मैंने महर्षि शिवव्रत लाल जी की पूजा नहीं की, मैंने उस

मालिक की पूजा की है। मैंने तम्बूरा हाथ में ले लिया और गाने लगा जो मेरे दिल में गुबार था वह निकला, बेहोश हो गया। दाता ने मुझसे कहा कि फ़कीरचन्द तुममें यह ऐब है कि तुम कामी हो और यही अशान्ति का कारण है। फिर मैंने अपने आपको control किया मगर ५ साल में फिर गिरा और दो बच्चे पैदा कर लिये। मैं तुमको मन का हाल बताता हूँ। कहना और है करना और है। मैं फिर गिरा और मुझे फिर होश आई। उसके बाद २६ साल मेरी औरत ज़िन्दा रही और अब उसको मरे हुए १८ साल हो गये फिर मैंने औरत को औरत नहीं समझा। मैं आपको सच्ची बात कहता हूँ। आप लोग परमार्थ चाहते हो परमार्थ धोखा नहीं है। मेरे सत्संग में आम आदमी नहीं आते पढ़े-लिखे आते हैं क्योंकि मैं Scientific बात करता हूँ, वह मान जाते हैं मेरी बात को। अब मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ कि तू बता तेरे पास कुछ है? इन्सान के ख़्याल में ताक़त है जब तुम्हारे मन में ताक़त है तो मेरे मन में भी ताक़त है। जब कोई दुःखी सच्चा होकर मेरे पास आता है तो मैं अपने दिल से यही चाहता हूँ कि हे दाता! इसका यह दुःख दूर कर दो बस, उनका दुःख दूर हो जाता है और Credit इस Holiness Faqir Chand को मिलता है पंडित फ़कीर चन्द न कुछ करता है न कराता है। जो मेरे पास दुःखी आते हैं मैं उनको शुभ भावना देता हूँ या सच्चा ज्ञान जो मेरी समझ में आया वह बता देता हूँ। बस इसके सिवाय मेरे पास कुछ नहीं है। चार दिन जीना है चूँकि मेरे ज़िम्मे duty थी बाबा सावन सिंह की ज़ातपाक ने मुझे कहा कि गुरु का हुकम ज़रूर मानो मैं तुम्हारी पुश्त-ए-पनाह रहूँगा। मैं निर्भय हो गया। मैं कृपाल सिंह के सत्संग पर गया मैंने

भी सत्संग कराया उसने भी कराया। मैंने कृपाल सिंह के सिर पर हाथ रखकर कहा कृपालिये सच्चा होकर रह वरना आप तो डूबेगा ही संगत को भी ले डूबेगा। बाबा चरण सिंह हैं मेरे साथ उनकी दो-तीन बार बात हुई है। He is very sincere and true man. यह और बात है कि वह Public को कोई बात कहते हैं या नहीं कहते हैं। गुरुओं का कसूर नहीं है लोग बदनाम कर देते हैं मैं अपने लोगों से कह देता हूँ कि ख़बरदार जो मेरी ग़लत तारीफ़ की कि बाबा अमेरिका में प्रकट हुआ। बाबा ने यह कर दिया वह कर दिया यह सब तुम्हारा विश्वास है, तुम्हारी श्रद्धा है, तुम्हारा यक़ीन है। तो मैंने जो कुछ आपको कहना था कह दिया। मैं सच्चे दिल से चाहता हूँ कि आपकी सब मनोकामनाएँ पूरी हों इसके सिवाय मेरे पास कुछ नहीं है।

सबको राधास्वामी !

नोट :— हज़ूर दाता दयाल जी कहा करते थे :—

जिस शख़्स की ज़बान काबू में नहीं न उसका जिस्म अपने काबू में है और न उसका मन अपने काबू में है, दुनिया में ऐसे कमज़ोर आदमी के लिए कामयाबी की सूरत नहीं है। अगर ज़िन्दगी में कामयाब होना चाहते हो तो गम्भीर और मम्भीर वृत्ति के बनो और अपने अन्दर सहन-शक्ति की आदत डालो।

माता जी का अमेरिका से लिखा पत्र महाराज जी के नाम

नवम्बर ३०, १९८४

परम पूज्य महाराज श्री :

चरण स्पर्श !

सभी दुनिया इस समय यहाँ सो रही है। होशियारपुर में जैसे हमारा दिन प्रात: के तीन बजे आरम्भ हो जाता है, ठीक उसी प्रकार यहाँ भी मेरी नींद ठीक तीन बजे खुल जाती है। कई दिनों से आपको पत्र लिखने की सोच रही थी, परन्तु पत्र नहीं थे। कल अरुण ने ला दिये सो आज लिख रही हूँ। मन्जू बहुत ही अच्छी लड़की है। लाखों बहुओं से अच्छी है। हमने जीवन भर एक दूसरे से प्यार करने की सौगन्ध ली है। हम एक दूसरे की खूब सेवा कर रहे हैं। कल मन्जू चैक कराने के लिए गई थी। डाक्टर ने कहा है कि बच्चा कभी भी हो सकता है। वैसे डेट तो १८ दिसम्बर बता रखी है। मैंने ९ दिसम्बर बताई है आपका क्या विचार है। अरुण हमेशा की तरह बहुत ही प्यारा, बहुत ही दयालु तथा बहुत ही भावुक है। मेरे यहाँ आने से बहुत सन्तुष्ट है, नहीं तो मन्जू की उसे हर समय चिन्ता रहती थी। हम सभी आपकी कमी को बहुत ही महसूस करते हैं। मन्जू कहती है कि यदि पापा यहाँ होते तो हमारी family पूर्ण हो जाती। परन्तु आपकी family तो सारे विश्व के लोग हैं। कितने दु:खी लोगों की आप ज़िन्दगी बनाते हैं, कितने लोगों को सहारा देते हैं, कितने

लोगों को मन की शान्ति प्रदान करते हैं इस बात को ध्यान में रखते हुए हमारी छोटी सी family क्या existence रखती है। कुछ भी तो नहीं। मन्जू, अरुण, दर्शी तथा उनकी आने वाली सन्तानों को इस बात का गर्व करना होगा कि आप केवल अपनी भौतिक family के लिए नहीं आए हैं इस संसार में। यह लाइनें लिखते-२ मेरी आँखों में आँसू आ गये हैं और पुरानी ज़िन्दगी की याद आ गई है, जब हम सब इकट्ठे रहते थे सभी इकट्ठे।

दर्शी से टेलीफ़ोन पर बात होती रहती है बहुत ही प्यारा लड़का है। वह थीसिज़् लिखने में व्यस्त है। हाँ मैंने उससे जयपुर में पढ़ाने की बात की थी। वह कम से कम एक साल के लिए भारत में पढ़ाने के लिए तैयार है। आप पाई साहिब से seriously बात कर लें, क्योंकि India में appointment तो जुलाई में ही हो जाते हैं। दर्शी अपना वीज़ा शीघ्र ही भेज देगा। वह १९ दिसम्बर को यहाँ आ रहा है और २६ दिसम्बर को A.P.A. की meeting पर New York जा रहा है। वहाँ वह तीन-चार दिन तक रहेगा और अपनी Service की बातचीत भी करेगा। आप पाई साहिब से seriously बात कर लीजिए। दर्शी जून में ही भारत जा सकता है। अभी वह मान गया है इसलिए हमें इस बात का लाभ उठाना चाहिए।

रानू को मैं मिलने उसके घर गई थी वह ठीकठाक है। डाक्टर हैरिस से बात होती रहती है। जैरी के साथ भेजा हुआ letter तथा सामान आपको मिल गया होगा। वर्मा साहिब के घर सब चीज़ें सम्भाल कर रख दीजिए। दीपा को कहिए कि मेरे पर्स में अरुण के टेलीफ़ोन जमा कराने की रसीद है अगर मिले तो उसको date तथा महीना नोट

करके हमें फ़ौरन लिखिए तथा रसीद भी भेज दें नहीं तो कम्पनी अरुण से ५५ डालर मांग रही है। ज़रूर भेजिए। आपके S. S. के तथा पैन्शन के पैसे बकाया जमा हो रहे हैं। वीज़ा कार्ड का मामला भी ठीक हो गया है। A.R.E. वालों का Erg. कैसे चल रहा है? काश मैं भी वहाँ होती तो बहुत मज़ा आता। जैरी कुछ दिन अधिक वहाँ रहना चाहता है। यदि उसे दो-चार हज़ार रुपयों की ज़रुरत पड़े तो आप उसे दे दीजिएगा उधार।

आप जब बसन्त के दौरे पर जाएँ तो तुलसी को या हरिवंस को अपने साथ ले जायें। सुमेर सिंह भी आपके साथ जाना चाहते थे, उन्हें साथ ले जायें। शब्दानन्द भी यदि जा सकें तो उन्हें ले जाइए। यदि वह नहीं जा सकें तो सेठी साहिब को साथ ले जायें। आप अपने स्वास्थ्य का पूरा-२ ध्यान रखा करें आपको मेरी सौगन्ध। मेरा स्वास्थ्य यहाँ आते ही ठीक हो गया। टाँग का दर्द तो बिल्कुल ही गुम हो गया है आपकी कृपा से। आप मुझे विस्तारपूर्वक पत्र शीघ्र लिखा करें। वर्मा साहिब, सुधा, दीपा, पंकज तथा नीरज की बहुत याद आती है उन सबको मेरा बहुत-२ प्यार। दीपा का प्यारा पत्र मिल गया है मैंने जज साहिब का नया टेलीफ़ोन नं० नोट कर लिया है। और क्या लिखूँ आप तो अन्तर्यामी हैं। मेरे दयालु महाराज जी सदा कृपा-दृष्टि बनाए रखना। अरुण, मन्जू आपको regard भेज रहे हैं। आशीर्वाद दीजिए हम सबको। I miss you badly.

आपकी वही भाग्य वही सरला

सत्संग परमसन्त
हजूर मानव दयाल जी
महाराज

19 - 9 - 1983

राधास्वामी,

आज परमदयाल जी महाराज ने टेपरिकार्ड के सत्संग में बताया कि नामदान का क्या मतलब है ? जिस नाम की मालिक से या गुरु से मांगने की प्रार्थना की जाती है वह नाम क्या है ? नाम और नामी में फ़र्क है। किसी चीज़ को जो हम नाम देते हैं वह वस्तु नामी है लेकिन महाराज जी ने नाम और नामी को एक बता दिया है।

सन्तमत में तीन चीज़ें हैं सत्संग, सद्गुरु और सतनाम। इसी तरह से भक्ति क्या है ? भक्ति के कई दर्ज़े हैं आखिर में जो भक्ति का दर्ज़ा है वही नाम है। इस दृष्टि से मैं भक्ति-मार्ग को ज्ञानमार्ग से ज्यादा अच्छा समझता हूँ। भक्ति से ऐसा ज्ञान हो सकता है जो किसी व्यक्ति को कई युगों की खोज के बाद मिलता है। कबीर साहिब पढ़े-लिखे नहीं थे उन्होंने वेद, पुराण पंडितों स सुने होंगे। उनके और पंडितों

के बीच वादविवाद बुद्धि के स्तर पर होता था। इस समय कट्टरवादी पंडित लोग जिस धर्म को सनातन धर्म कहते हैं वो असल में सनातन धर्म नहीं है। उसकी खोज तो बहुत पहले हो चुकी है। कमी तो यह है कि लोगों ने सब कुछ पढ़ा नहीं है। सनातन धर्म और सन्तमत में परस्पर कोई भेद नहीं है। सन्तमत सनातन धर्म की निरन्तरता है। यह बात जिसको समझ में नहीं आई उसने सन्तमत को कट्टर बना दिया, अलग फ़िरका बना दिया। दाता दयाल ने कहा है कि नामदान की खानी को वह खोज सकता है जिसमें भक्ति है, प्रेम है और ज्ञान है। वह ज्ञान और चीज़ है हरएक मनुष्य को वह ज्ञान एक साथ प्राप्त नहीं हो सकता। लेकिन जब एक मनुष्य प्रेम से ओतप्रोत होकर अपने अन्तर में जाकर भक्ति करता है तब वह मालिक से एक हो जाता है और उसमें ज्ञान पैदा हो जाता है। लोग भक्ति का मतलब एक भगवान् और एक भक्त समझते हैं। जिस व्यक्ति से आप प्यार करते हैं और उसके प्रति आपका प्यार जब सच्चा और दृढ़ हो जाता है तो उस व्यक्ति में और प्रेम करने वाले मे कोई भेद नहीं रह जाता, प्रेम करने वाला उसके लिए जान तक कुर्बान कर देता है। उसके साथ एक हो जाता है। परम दयाल जी ने अपने गुरु दाता दयाल जी की क्या सेवा नहीं की। दुनिया में वैसी कोई मिसाल नहीं कि किसी शिष्य ने अपने गुरु की इतनी सेवा की हो। सब कुछ उनके अर्पण कर दिया। भक्ति की पहली सीढ़ी तो यह है कि आदमी जिससे प्यार करता है उसे अपने से अलग समझता है फिर उससे एक हो जाता है। सत्संग की क्यों ज़रूरत होती है? क्योंकि अनेक जन्मों के जो पर्दे पे पर्दे, पर्दे पे पर्दे पड़े हैं उनको हटाने के लिए सत्संग की ज़रूरत

होता है। भक्ति से मन एकाग्र हो जाता है, एकाग्र होने से पर्दा हटता है और कर्म कटते हैं तब वह सन्त हो जाता है और उस अवस्था में आ जाता है जब सुख-दुःख, लाभ-हानि सब बराबर होते हैं। यह सन्तगति है। भक्त अपनी बुद्धि का इस्तेमाल नहीं करता। बुद्धि आलोचना करती है और बीच में रुकावट डालती है।

विवेक अलग चीज़ है। विवेक क्या है? सत्य क्या है? असत्य क्या है? असली तत्त्व क्या है? मन क्या है? मन से परे क्या है? इनको समझ लेना विवेक है। जब यह समझ में आ जाता है तो ज़िन्दगी ऐसे चलती है जैसे बिना हाथ-पैर मारे तैर रहे हों।

चार वेद चार तत्त्व हैं। एक है वेदमन्त्र, दूसरा है वेदमन्त्रों की व्याख्या, तीसरा आरण्यक चौथा उपनिषद्। यह व्याख्या ग्रन्थ ऋषियों ने हज़ारों साल की तपस्या करने के बाद, अलख, अगम, अनामी तक पहुँचने के बाद लिखे हैं अर्थात् ब्राह्मण ग्रन्थ लिखे। ब्राह्मण ग्रन्थ क्या हैं? वेदमन्त्रों में जो शब्द इस्तेमाल किये गये हैं उनकी व्याख्या ही ब्राह्मण ग्रन्थों में की गई है। उस व्याख्या के बाद आरण्यक और उपनिषद् लिखे गये हैं। मैं आरण्यक और उपनिषदों को उपनिषद् ही मानता हूँ। उपनिषद् अनुभव का दूसरा नाम है।

"सुरत शब्द दोऊ अनुभव रूपा, तू तो पड़ा भरम के कूपा"

क्या आप उन ऋषियों के अनुभव को झुठला सकते हैं? जिन्होंने उपनिषद् लिखे हैं आप उनके कदमों की धूल तक नहीं पहुँचे। १९७६ में महाराज जी मेरे पास अमेरिका गये। कहते हैं परसराम! मैं यहाँ के लोगों के लिए थोड़े ही आया हूँ, ना मैं पैसे लेने आया हूँ, मैं तो I. C. Sharma

के लिए आया हूँ। मैंने कहा महाराज जी! अलख, अगम और अनामी से ऊपर एक चीज़ और है। कहने लगे कि यह सवाल मुझे पहले किसी ने नहीं किया। उस वक़्त उन्होंने मझे 'दयाल रसाला' किताब दिखाई जिसमें अलख, अगम, अनामी के ऊपर दयाल लिखा हुआ था। मैं यह नहीं कहता कि आप वेद पढ़ो। वेद पढ़ने के लिए आपको ६ शास्त्र चाहिएँ। एक वेदमन्त्र को समझने के लिए पहले ६ विज्ञान चाहिएँ। ६ विज्ञान हैं। ६ शास्त्र हैं। दर्शन अलग हैं। शास्त्र कौन से हैं? (१) शिक्षा (२) छन्द (३) व्याकरण (४) ज्योतिष (५) कल्प (६) निरुक्त।

शिक्षा—शिक्षा हमें यह बताती है कि किस शब्द को ऊँचा बोलना है और किस शब्द को ऊँचा नहीं बोलना है। इस बोलने में भी फ़र्क है क्योंकि यह ध्वनि है। यदि उस शिक्षा के अनुसार आप वेदमन्त्र को बोलते हो तो बारिश हो सकती है क्योंकि उसके वाइब्रेशन हैं, कम्पन हैं, शब्द का कम्पन है तो पहले शिक्षा हमें बताती है कि ॐ भूर्भुवः स्वः ऐसे बोलने से आपका शब्द ऊपर के शब्द के साथ मिल जाता है और वो शब्द टकराकर के ऐसी Radiation अर्थात् किरणें देता है कि आपकी इच्छाएँ पूरी हो जाती हैं। शिक्षा इतनी वैज्ञानिक थी।

छन्द—शिक्षा के बाद आपको कविता आनी चाहिए। कविता के सिद्धान्त आने चाहिएँ क्योंकि वेदों का ज्ञान कविताबद्ध है। जितने भी सन्त हुए हैं जैसे कबीर साहिब, स्वामी जी महाराज, दाता दयाल जी, परम दयाल जी महाराज सभी ने कविता लिखी और थोड़ी बहुत मैं भी लिख लेता हूँ। भगवद् गीता के ७०० श्लोकों को मैंने

अंग्रेज़ी की कविता में लिखा है। ऋषि, सद्गुरु और कवि एक होता है। कवि वो होता है जो ऋषि होता है।

व्याकरण—व्याकरण है ग्रामर। व्याकरण के नियम होते हैं। व्याकरण भगवान् शंकर के डमरू की बारह ध्वनियों से निकली, शब्द से निकली है।

कल्प—कल्प क्या है? कल्प कोटि-कोटि ब्रह्माण्डों का इतिहास है। हमारे पुराणों के अन्दर कल्प हैं। असल में संस्कृत की जो गूढ़ चीज़ें थीं वह ब्राह्मणों ने छुपा ली थीं क्योंकि उनको समझना हरएक के वश की बात नहीं थी। उन्होंने सिर्फ़ वही ज्ञान दिया जो आम लोगों की समझ में आ जाये और देवताओं को मनुष्य बनाकर के कथाएँ लिखीं।

निरुक्त—हर एक शब्द का तार-तार करके उसका अर्थ बतलाना निरुक्त है। शब्द में क्या है? ओम् शब्द में क्या है? 'अ' उस शक्ति का नाम है जो पैदा करती है। उसे ब्रह्मा कहते हैं। 'उ' उस शक्ति का नाम है जो पालन करती है। उसे विष्णु कहा जाता है। 'म' उस शक्ति का नाम है जिसके अन्दर सृष्टि आकर समाप्त हो जाती है। यह ज़िन्दगी क्या है? लब खुले और बन्द हुए 'ॐ'। शब्दों के विज्ञान को ही निरुक्त कहते हैं।

ज्योतिष—ज्योतिष का मतलब है प्रकाश का ज्ञान। आकाश के अन्दर नक्षत्र हैं, सितारे हैं, सौरमण्डल हैं इन सबका ज्ञान ज्योतिष कहलाता है। इन छः को पढ़ने के बाद ही वेदमन्त्रों के अर्थ को समझा जा सकता है।

मन्त्रों के अन्दर जो शब्द प्रयुक्त किये गये हैं उनको व्याख्या के लिए ब्राह्मण ग्रन्थ लिखे गये। महाराज जी ने कहा है कि मन के ऊपर उठने के लिए प्रकाश में जाना ज़रूरी है। देवता क्या है? ब्राह्मण ग्रन्थ में लिखा है कि

देवता 'दिव्' धातु से निकला है जो चमकता है। जो प्रकाश से निकला है वह देवता है। इसी प्रकार प्रजापति क्या है? ब्राह्मण ग्रन्थ में प्रजापति की व्याख्या इस प्रकार है :—

प्रजापतिश्चरति गर्भे अन्तरजायमानो बहुधा विजायते तस्य योनिं परिपश्यन्ति धीराः तस्मिन् ह तस्थुर्भुवनानि विश्वा ॥

प्रजापति वह तत्त्व है, वह आखिरी वस्तु है जो हर चीज़ के केन्द्र में मौजूद होती है। शरीर, मन और आत्मा के आगे केन्द्र है। उस केन्द्र के चारों तरफ आत्मा घूमती है, आत्मा के चारों तरफ मन घूमता है, मन के चारों तरफ शरीर घूम रहा है और प्रजापति हर वस्तु के अन्तस् में रहता है। वह पैदा नहीं होता। वह गुरु है, तत्त्व है, कभी मरता नहीं है। 'बहुधा विजायते' वही एक तत्त्व अनेक रूपों में प्रकट होता है। दूसरे शब्दों में प्रजापति तत्त्व ही अनेक भुवनों में कोटि-२ ब्रह्माण्डों में विकसित हो जाता है। इससे यह जाहिर होता है कि वह अनेक भुवनों का यानि कि ब्रह्माण्डों का मालिक है। इसलिए ही तो उसे प्रजापति कहा जाता है। जितने भुवनों उनका भुवनेश्वर है। उसी पर सारी सृष्टि आधारित है। भूः, भुवः, स्वः, महः, जनः, तपः उसी पर आधारित हैं। यह वेदों की बात है।

ज्ञान का क्या मतलब है? ज्ञान का यह अर्थ नहीं कि कोई व्यक्ति कहे कि मैंने पढ़ लिखकर ज्ञान प्राप्त कर लिया या मैं जान गया, कोई दूसरा नहीं जानता तो यह अहंकार आ गया। जिसको ज्ञान होता है वह प्रेम से प्रवाहित होता है। जब असली ज्ञान होता है तो किसी से नफ़रत नहीं होती, द्वेष नहीं होता, ऐसे व्यक्ति के अन्दर से दूसरों के लिए प्रेम तथा हमदर्दी अपने आप प्रवाहित होती है।

उससे फ़ायदा उठाने के लिए सत्संगत और सद्गुरु की आवश्यकता होती है अगर मनुष्य को केवल ज्ञान है तो उससे अहंकार आ जायेगा। यदि ज्ञान के साथ भक्ति भी है तो मनुष्य में अहंकार नहीं आता बल्कि प्रेम, नम्रता आती है। जिस तरह से परम भक्त को पढ़ने की जरूरत नहीं होती उसी प्रकार ज्ञानी को इन दर्ज़ों से गुज़रने की ज़रूरत नहीं होती। अगर ज्ञानी भक्त नहीं है तो वह ज्ञानी नहीं है। दोनों चीज़ें एक जगह पर आकर मिलती हैं। कबीर साहिब यदि इस समय शरीर के अन्दर आ जायें तो उन्हें कोई भी कालिज वाला अपने यहाँ प्रोफेसर नहीं बनायेगा। कबीर साहिब से कहेगा कि पहले आप M.A., Ph.D. की डिग्री लायें। जबकि हज़ारों प्रोफेसरों ने कबीर साहिब के ऊपर लेख लिखकर Ph.D. की डिग्री प्राप्त की है। कबीर साहिब ने भक्ति के द्वारा ही जो कुछ लिखा वह उच्च कोटि का ज्ञान था। इसलिए भक्ति ज्ञान से ज़्यादा ऊँची है। कभी-२ ज्ञान रास्ते में रुकावट डालता है।

नाम ज्ञानखानी के अन्दर रखा हुआ है उस खान को खोदने के लिए प्रेम की कुदाल चाहिए। जब तक प्रेम नहीं है तब तक ज्ञान नही हो सकता है। यदि आप किसी से ज्ञान लेना चाहते हैं तो आपको उस ज्ञानदाता से प्रेम करना चाहिए। ज्ञानदाता भी उसी को ज्ञान देता है जिसको वह स्वयं प्यार करता है। यहाँ पर पढ़ा-लिखा ज्ञानी नहीं है बल्कि वह मनुष्य ज्ञानी है जिसको अनुभव हो जाता है कि राम सभी के अन्दर मौजूद है। इस ज्ञान के बाद उसके अन्दर भेदभाव नहीं रहता।

परमदयाल जी महाराज ने कहा कि असली नाम क्या

है ? असली नाम वह है जिसके मिलने के बाद आपके अन्दर द्वैतभाव नहीं रहता, द्वन्द्व नहीं रहता, भेदभाव नहीं रहता, दुर्मति जाती रहती है और एक मत का हो जाता है। असली नाम को लेने के लिए सत्संग की ज़रूरत है। नाम सुमिरन करने के लिए दिया जाता है। गुरु जो भी नाम दे उसी का सुमिरन करना चाहिए। यह भी गुरु भक्ति है। भक्त क्या है ? जो विभक्त नहीं है। जो एक हो जाता है। आख़िर में शरणागत की हालत होती है। शरणागत की स्थिति में मैं और तू कुछ नहीं रहता।

भक्त कई प्रकार के होते हैं :—

[१] आर्तभक्त—अधिकतर आर्तभक्त ही होते हैं। जब मनुष्य दुःखी हो जाते हैं तब वह मालिक की तरफ आते हैं।

[२] नाम के लिए दीवाना—दूसरा भक्त वह होता है जिसको किसी और चीज़ की चाह होती है कि मुझे एक लाख रुपया मिल जाये, मैं राष्ट्रपति बन जाऊँ आदि-२। लेकिन जब इच्छा पूरी नहीं होती है तो मालिक की शरण में आकर कहता है कि अब तू ही जान। महाराज जी कहते थे कि यदि मास्टर हो तो मास्टरी में सब से ऊँचे हो जाओ। किसी चीज़ को छोड़ना नहीं है, निराश नहीं होना चाहिए। जब देखो कि कोई चीज़ तुम्हारी शक्ति के बाहर है तो उस मालिक से कहो कि ऐ मालिक तू आ। इससे तुम उस मालिक के साथ जुड़ जाओगे। वह हर जगह मौजूद है, तुम्हारे पास है। वह तुम्हें रास्ता ज़रूर दिखायेगा।

[३] जिज्ञासु—तीसरा भक्त होता है जिज्ञासु अर्थात् खोजी। जिज्ञासु वह होता है जो खोजता है। जिज्ञासु की

बुद्धि ज़्यादा तेज़ होती है। जो सच्ची खोज करता है वह आगे जाकर मालिक से मिल जाता है।

[४] ज्ञानी—ज्ञानी वह होता है जिसको यह ज्ञान हो जाता है कि मालिक सबके अन्दर है, मेरे भी अन्दर है यही सहजसमाधि हो जाती है।

जो सबको तुम्हीं में, तुम्हें सब में देखे।
वो आशिक है तेरा, और माशूक तू है॥
जिधर देखता हूँ उधर तू ही तू है।
कि हर शै में जलवा तेरा हू-ब-हू है॥

चारों प्रकार के ही भक्त मालिक के लिए उदार हैं। ज्ञानी मालिक को ज़्यादा प्यारा होता है। जो भक्त होता है वह ज्ञानी हो ही जाता है, जो असली ज्ञानी होता है वह भक्त भी होता है। इन्हीं शब्दों के साथ मैं सभी को सद्भावना देता हूँ।

सभी को राधास्वामी !

नोट :—हज़ूर दाता दयाल जी कहा करते थे—

(१) मुँह को साँप और खन्ज-खजूरे का सुराख न बनाओ बल्कि उसे मोहब्बत और प्रेम के शब्दों के रहने का घर बनाओ।

(२) जिस तरह गन्दी जगह से बदबू निकलती है उसी तरह गन्दे आदमी के मुँह से अपशब्द और गन्दे ख़्याल निकलते हैं।

सारांश

इस मासिक सन्देश में अमेरिका से आये हुए अन्तर्राष्ट्रीय शिष्टमण्डल के भारत व्यापी दौरे का विवरण है। यह शिष्टमण्डल एक अन्तर्राष्ट्रीय संस्था A.R.E. के तत्त्वावधान में भारत की वर्तमान सांस्कृतिक और धार्मिक अवस्था को आँकने के लिए और मानव कल्याण को बढ़ावा देने के लिए भारतीय आध्यात्मिक विद्वानों से प्रेरणा लेकर वापिस गया। इस सन्देश के आख़िरी भाग में सुरत-शब्द योग की ऐसी व्याख्या है जिसके समझने से सभी धर्मों वाले लोग उस सच्चाई को पा सकते हैं जिससे आपस के मतभेद और धर्मों के लड़ाई-झगड़े समाप्त हो सकते हैं।

मासिक सन्देश

मेरे प्यारे सत्संगियो :

राधास्वामी, परमदयाल जी सहाई !

नवम्बर के महीने में परमदयाल जी महाराज के जन्मदिन के उपलक्ष्य में १७ और १८ तारीख को मानव कल्याण सभा की ओर से चण्डीगढ़ में विशाल सत्संगों का आयोजन किया गया। मैंने इन दो सत्संगों में सन्तमत की सच्चाई फैलाने और उसको सरल बनाने के लिए परमदयाल

जी ने जिस शिक्षा को बदला उसकी व्याख्या की। दोनों दिन सत्संग में चण्डीगढ़ और आसपास के इलाकों से आये हुए सत्संगी भारी संख्या में मौजूद थे। १८ नवम्बर को ही मैं सांयकाल तीन बजे मानवता मन्दिर में सत्संग के लिए पहुँच गया। इस प्रकार हमको इस बार चण्डीगढ़ और होशियारपुर में सत्संगियों के साथ बम्बई से लेकर बंगलौर, औरंगाबाद, उदयपुर, जयपुर, दिल्ली, धर्मशाला आगरा, बनारस, भुवनेश्वर और जगन्नाथपुरी जाना पड़ा। याद रहे कि यह सत्संगी A.R.E. अर्थात् ज्ञान और खोज की उस संस्था से सम्बन्ध रखते हैं जिसने हर बार परमदयाल जी महाराज को अमरीका में सत्संगों के लिए निमन्त्रण दिया। इस संस्था के विभिन्न देशों में रहने वाले ५० हज़ार से अधिक सदस्य हैं और लाखों समर्थक हैं। पश्चिम में यही एक ऐसी संस्था है जो पुनर्जन्म और कर्म के सिद्धान्त को स्वीकार करती है और उसे ईसा के उपदेशों से जोड़ती है। आरम्भ में तो मेरा विचार इन अमरीकी सत्संगियों के साथ एक-दो स्थानों पर जाने का था किन्तु श्रीमती इन्दिरा गान्धी के निधन के पश्चात् देश भर में अव्यवस्था फैलने के कारण इस समूह की नेत्री श्रीमती नोरीन लियरी ने मुझे ५ नवम्बर को अमरीका से जयपुर में टैलीफोन किया। उन्होंने मेरी अनुमति मांगी कि क्या उनके इस समूह के दौरे को स्थगित कर दिया जाये। मैंने उन्हें आश्वासन दिलाया कि उनकी संस्था के सदस्यों को भारत में कोई हानि नहीं पहुँचेगी। इस पर श्रीमती लियरी ने आग्रह किया कि मैं उनके शिष्टमण्डल के साथ-२ सभी जगहों पर जाऊँ। क्योंकि इस संस्था ने हमेशा परमदयाल जी महाराज का आदर किया है और उनके उपदेशों को सच्चे दिल से अपनाया है इसलिए मैंने

श्रीमती लियरी के सुझाव को स्वीकार किया।

यह दौरा १४ नवम्बर १९८४ तक चला और उसी प्रातः को साढ़े चार बजे इस शिष्टमण्डल को पालम के हवाई अड्डे में विदा किया। इस दौरे में बहुत ही अच्छे अनुभव हुए। इस शिष्टमण्डल के सभी सदस्यों ने अनुभव किया कि भारत में प्रेम और सद्भावना है और परमदयाल जी के सत्संगी उनके सच्चे उपदेश पर चलते हुए मानवता के जीवित प्रतीक हैं। बम्बई में मानवता की आचार्य श्रीमती निर्मला पण्डित ने सत्संग आयोजित किया और सभी अमेरिकी सत्संगियों को अपने छोटे से घर में प्रीतिभोज दिया। यह सभी सत्संगी भी बड़े प्रेम से एक ही छोटे से कमरे में ज़मीन पर बैठ गये और शाकाहारी भोजन खाया। उन्होंने अनुभव किया कि उस भोजन में प्रेम का रस था और वह उन्हें ताज होटल के खाने के मुकाबले में बहुत ही अच्छा लगा। इसी तरह से जयपुर में मेरे प्रिय शिष्य व्यावर के नगर सेठ मोती चन्द गुलेच्छा ने सिसोदिया गार्डन में एक महान् सत्संग और प्रीतिभोज का आयोजन किया। इसमें १५० से अधिक लोगों ने भाग लिया और अमरीकी सत्संगियों के साथ सत्संग सुना और राजस्थानी भोजन खाया। इस प्रकार के अनुभव ने अमरीकी सत्संगियों को बहुत प्रभावित किया। इसी तरह से ८ दिसम्बर को मथुरा में रिटायर्ड D.S.P. श्री ओंकार सिंह जी ने अपने फार्म पर भी अमरीकी सत्संगियों को प्रीतिभोज दिया। अमरीकी सत्संगियों ने इस आयोजन की बहुत प्रशंसा की और मथुरा तथा आस-पास के सत्संगियों से घुल-मिल गये। इसी प्रकार बनारस में गंगा के तट पर समाधि, ध्यान लगाने के बाद १० दिसम्बर को दोपहर को अमरीका का यह शिष्टमण्डल

हमारे गाँव के सत्संगियों को मिलने के लिए मगराहा और खानपुर ग्रामों में गया। मगराहा में डा० मणी राम सिंह के घर पर उन्होंने अल्प आहार किया उसके बाद खानपुर में परमदयाल जी के परम प्रिय शिष्य डा० सतनाम जी के घर पर एक विशाल सत्संग आयोजित किया गया। इस अवसर पर अमरोकी सत्संगियों ने उस इलाके के सत्संगियों से घुल-मिलकर मेरा सत्संग सुना। यहाँ पर शिष्टमण्डल के दो सदस्यों ने ग्रामीण सदस्यों के बारे में प्रशंसापूर्ण और प्रेम भरे उद्गार प्रकट किये।

इस दौरे से परमदयाल जी के विश्वव्यापी परिवार के परस्पर प्रेम और सहयोग का एक नमूना दृष्टिगोचर हुआ। सन्तोषजनक बात यह है कि हर स्थान पर अमरीकी सत्संगी प्रातःकाल मेरे सत्संग को सुनने के लिए और समाधि, ध्यान लगाने के लिए उपस्थित हो जाते थे। इस दौरे के अनुभवों ने अमरीकी सत्संगियों को रूहानी ज़िन्दगी में एक नई दिशा दी। वे पूरी तरह से सन्तुष्ट होकर भारत से विदा हुए। मुझे पूरी आशा है कि वे सभी मानवता मन्दिर से सम्पर्क बनाये रखेंगे। यहाँ पर उल्लेखनीय बात यह है कि पहली दिसम्बर १९८४ को अमरीकी सत्संगियों को मानवता मन्दिर की ओर से स्वागत प्रीतिभोज दिया गया जिसमें देहली के और आस-पास के भारतीय सत्संगियों ने बड़े उत्साह से भाग लिया। इस अवसर पर Sh. K. P. Verma जुडीशियल सैशन जज ने मानवता मन्दिर की ओर से इस शिष्टमण्डल का स्वागत किया और मेरे परम प्रिय श्री विजय नरेश नेगी ने अंग्रेज़ी भाषा में सभी उपस्थित सत्संगियों को सतगुरु की महिमा पर प्रवचन दिया। २ दिसम्बर १९८४ को इस शिष्टमण्डल ने

१७. श्रीमती भाग्य शर्मा, क्लीवलैण्ड, यू. एस. ए.।
१८. डा० रामदेव राव, पिट्सबर्ग, यू. एस. ए.।
१९. श्री अजीत कुमार ग्रीन वे, यू. एस. ए.।
२०. ,, नन्द सिंह सिहरा, हैमिल्टन, केनेडा।
२१. ,, रवि शर्मा, लण्डन, इंग्लैंड।
२२. ,, जे. सी. गुप्ता, ब्रूमविच, इंग्लैंड।
२३. ,, किशोरचन्द गुप्ता, ब्रूमविच, इंग्लैंड।
२४. डा० के. एम. खुराना, चशायर, इंग्लैंड।
२५. डा० जॉनथन पीटर्स, कोलम्बिया, यू. एस. ए.
२६. प्रो० मिलड्रिड मिकीनी, बाल्टीमोर, यू. एस. ए.।
२७. श्रीमती थैल्मा कार्टर, बाल्टीमोर, यू. एस. ए.
२८. श्री ज्ञानेश्वर गोयल, अतिरिक्त सैशन जज, मण्डी, (हिमाचल प्रदेश)।
२९. श्री शाह पदम जंग, बोकारो, बिहार।
३०. श्री क्रान्ति कुमार शर्मा, शिमला (हिमाचल)।
३१. श्री नारायण दास डोगरा, मानवता मन्दिर, होशियारपुर।

अध्यक्ष अपनी सुविधा के अनुसार अन्य सदस्यों को इस सूची में सम्मिलित कर सकता है। इस कार्य के लिए मानवता मन्दिर होशियारपुर में कार्यालय खोल दिया गया है और श्री योगेश्वरानन्द एम. ए. को कार्यालय मन्त्री तथा कार्यवाहक सम्पादक की हैसियत से नियुक्त कर दिया गया है। इस महान् कार्य के लिए धनराशि के रूप में अनुदान देते समय चैक या ड्राफ्ट पर "मानवता मन्दिर शताब्दी फण्ड" का नाम लिख देना चाहिए।

जो सत्संगी किसी प्रकार का सुझाव देने में या ऊपर दिए गए तीन कार्यक्षेत्रों में रुचि रखते हों, वो अध्यक्ष से पत्र-व्यवहार करें। ३१ अगस्त १९८५ तक सभी प्रकाशित करने

योग्य सामग्री, लेख और शोध-पत्र मानवता मन्दिर में पहुँच जाने चाहिएँ। हर प्रकार का अनुदान दो सालों में हर समय स्वीकार किया जायेगा। यह मानवता मन्दिर का एक महान् उत्सव है। इसलिए सभी को खुले दिल से परमदयाल जी के इस विश्वव्यापी मानवता के कार्य में योगदान देने का आह्वान किया जा रहा है।

नारायण दास डोगरा
(जनरल सेक्रेटरी)

परमसन्त हजूर मानवदयाल डा. आई. सी. शर्मा जी महाराज का बसन्त का टूर प्रोग्राम

	प्रस्थान तिथि		आगमन तिथि तथा विश्राम स्थान
1.	18-2-85	मैटाडोर द्वारा खानपुर से बनारस।	स्व: To विवेकानन्द बनारस शाम 7 बजे
2.	19-2-85	मैटाडोर द्वारा बनारस से इलाहाबाद।	श्री सुमित्रा कुमार, गौरी भवन 397/13, C/214 मीरापुर शाम 6 बजे सत्संग।
3.	20-2-85 से 21-2-85	मैटाडोर द्वारा लखनऊ के लिए रवानगी	श्री के. एम. तिवारी 88 गौतम बुद्ध मार्ग लखनऊ, सत्संग शाम को।
4.	22-2-85	मैटाडोर द्वारा गोरखपुर से रवानगी।	फोन नं० 31914 सत्संग शाम को।

5.	23-2-85	मैटाडोर द्वारा सीतापूर से रवानगी।	
6.	23-2-85 से 3-3-85	मिश्रक तीर्थ का प्रोग्राम श्री वास्तव के मुताबिक उन्नाव, चोब्बेपुर, भट्टाकोठी कन्नौज, कानपुर इत्यादि।	
7.	4-3-85 से 5-3-85	कानपुर से मुरादाबाद के लिए रवानगी।	श्री कौशिक साकेत कालोनी।
8.	6-3-85 से 10-3-85	मानवता मन्दिर बिलारी।	श्री चन्द्र कुमार शर्मा नोटरी क्लब, बिलारी
9.	11-3-85	बनवारीपुर।	
10.	12-3-85 से 13-3-85	अलीगढ़	C/o मेजर एस. डी. गोयल इन्डैन गैस कं. अलीगढ़।
11.	14-3-85	दिल्ली	श्री के. पी. वर्मा सैशन जज, 17/33 राजपुर रोड, देहली फोन नं० 2912513
12.	15-3-85	सुबह होशियारपुर के लिए रवानगी।	

नोट :—मथुरा का प्रोग्राम बाद में प्रकाशित किया जायेगा।

प्रार्थना

राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी।
अलख अगम और अनामी।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी।
परम, सन्त का रूप धरा, जीवों पर उपकार किया।
सीधा सच्चा मार्ग दिया, आये धुर पद धामी।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी।
बन कर आये परम फ़कीर, हरने सब जीवों की पीर।
परम दयालु दानी वीर, नाम दान के दानी।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी।
राम भी हो और कृष्ण भी तुम।
तुम महावीर और बुद्ध गौतम।
कबीर, गुरु नानक, पुरुषोत्तम, सब नामों में अनामी।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी।
मानवता का किया प्रचार, निज अनुभव का दे दिया सार।
ऐसे गुरु को बारम्बार, नमामि नमामि नमामि।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी।
दाता दयाल के प्यारे तुम मानव के रखवारे तुम।
निर्गुण और सगुण भी तुम, सब के अन्तर्यामी।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी।

मानवता मन्दिर में अगला मासिक सत्संग 17-2-85 को होगा।

Regd. No. 26265/74 FEBRUARY 10th 1985
MANAV MANDIR NWHSP—7

ADDRESS

To

938. Sh. Shinde Pithal
S/o Arjun Rao Gouli
Gudda Banswada Post.
Nizamabad Distt.A.P.

Phone : 2022

From :

MANAVTA MANDIR
SUTEHRI ROAD,
HOSHIARPUR-146001.

Shiv Dev Rao Press Manavta Mandir, Hoshiarpur (Pb.)